

हिंदी

कक्षा IX

अध्याय 2- एवरेस्ट : मेरी शिखर यात्रा

मौखिक

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-दो पंक्तियों में दीजिए-

प्रश्न 1. अग्रिम दल का नेतृत्व कौन कर रहा था?

उत्तर-अग्रिम दल का नेतृत्व प्रेमचंद कर रहे थे।

प्रश्न 2. लेखिका को सागरमाथा क्यों अच्छा लगा?

उत्तर-लेखिका को 'सागरमाथा' नाम इसलिए अच्छा लगा क्योंकि सागरमाथा का अर्थ है- सागर का माथा और एवरेस्ट संसार की सबसे ऊँची चोटी है।

प्रश्न 3. लेखिका को ध्वज जैसा क्या लगा?

उत्तर-लेखिका को तेज हवाओं के कारण उठी हुई चक्करदार बर्फ़ीली आकृति ध्वज जैसी प्रतीत हुई।

प्रश्न 4. हिमस्खलन से कितने लोगों की मृत्यु हुई और कितने घायल हुए?

उत्तर-हिमस्खलन से दो व्यक्तियों की मृत्यु हुई और नौ लोग घायल हुए।

प्रश्न 5. मृत्यु के अवसाद को देखकर कर्नल खुल्लर ने क्या कहा?

उत्तर-मृत्यु के अवसाद को देखकर कर्नल खुल्लर ने कहा कि ऐसे साहसिक अभियानों में होने वाली मृत्यु को सहज भाव से स्वीकार करना चाहिए।

प्रश्न 6. रसोई सहायक की मृत्यु कैसे हुई?

उत्तर-रसोई सहायक की मृत्यु स्वास्थ्य के प्रतिकूल जलवायु में काम करने के कारण हुई।

अध्याय 2- एवरेस्ट : मेरी शिखर यात्रा

प्रश्न 7.कैंप-चार कहाँ और कब लगाया गया?

उत्तर-कैंप-चार 7900 मीटर ऊँची 'साउथ कोल' नामक जगह पर 29 अप्रैल को लगाया गया था।

प्रश्न 8.लेखिका ने तेनजिंग को अपना परिचय किस तरह दिया?

उत्तर-लेखिका ने तेनजिंग को अपना परिचय देते हुए कहा कि वह नौसिखिया है और एवरेस्ट उसका पहला अभियान है।

प्रश्न 9.लेखिका की सफलता पर कर्नल खुल्लर ने उसे किन शब्दों में बधाई दी?

उत्तर-लेखिका की सफलता पर कर्नल खुल्लर ने कहा- मैं तुम्हारी इस अनूठी उपलब्धि के लिए तुम्हारे माता-पिता को बधाई देना चाहूँगा। XXX देश को तुम पर गर्व है और अब तुम ऐसे संसार में वापस जाओगी, जो तुम्हारे अपने पीछे छोड़े हुए संसार से एकदम भिन्न होगा।

लिखित

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (25-30 शब्दों में) लिखिए-

प्रश्न 1.नजदीक से एवरेस्ट को देखकर लेखिका को कैसा लगा?

उत्तर-नजदीक से एवरेस्ट को देखने पर लेखिका भौंचक्की रह गई। उसे टेढ़ी-मेढ़ी चोटियाँ ऐसी लग रही थीं मानो कोई बरफ़ीली नदी बह रही हो।

प्रश्न 2.डॉ. मीनू मेहता ने क्या जानकारीयाँ दीं?

उत्तर-डॉ. मीनू मेहता ने लेखिका को अल्युमिनियम की सीढ़ियों से अस्थायी पुलों का निर्माण करने, लट्टों और रस्सियों का उपयोग करने, बर्फ़ की आड़ी-तिरछी दीवारों पर रस्सियों को बाँधने तथा अग्रिम दल के अभियांत्रिकीकार्यों की विस्तृत जानकारी दी।

अध्याय 2- एवरेस्ट : मेरी शिखर यात्रा

प्रश्न 3. तेनजिंग ने लेखिका की तारीफ में क्या कहा?

उत्तर-तेनजिंग ने लेखिका की तारीफ में कहा, “तुम पक्की पर्वतीय लड़की लगती हो। तुम्हें तो पहले ही प्रयास में शिखर पर पहुँच जाना चाहिए।

प्रश्न 4. लेखिका को किनके साथ चढ़ाई करनी थी?

उत्तर-लेखिका के अभियान-दल में यों तो लोपसांग, तशारिंग, एन.डी. शेरपा आदि अनेक सदस्य थे। किंतु उन्हें जिन साथियों के संग यात्रा करनी थी, वे थे-की, जय और मीनू।

प्रश्न 5. लोपसांग ने तंबू का रास्ता कैसे साफ़ किया?

उत्तर-लोपसांग ने तंबू का रास्ता साफ़ करने के लिए अपनी स्विस् छुरी निकाली। उन्होंने लेखिका के आसपास जमे बड़े-बड़े हिमपिंडों को हटाया और लेखिका के चारों ओर जमी कड़ी बरफ़ की खुदाई किया। उन्होंने बड़ी मेहनत से लेखिका को बरफ़ की कब्र से खींच निकाला।

प्रश्न 6. साउथ कोल कैंप पहुँचकर लेखिका ने अगले दिन की महत्वपूर्ण चढ़ाई की तैयारी कैसे शुरू की?

उत्तर-‘साउथ कोल’ कैंप पहुँचकर लेखिका ने अगले दिन की चढ़ाई की तैयारी शुरू की। उसने खाना, कुकिंग गैस तथा ऑक्सीजन सिलेंडर इकट्ठे किए। उसके बाद वह चाय बनाने की तैयारी करने लगी।

(ख) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (50-60 शब्दों में) लिखिए-

प्रश्न 1. उपनेता प्रेमचंद ने किन स्थितियों से अवगत कराया?

उत्तर-उपनेता प्रेमचंद ने अभियान दल को खंभु हिमपात की स्थिति की जानकारी देते हुए कहा कि उनके दल ने कैंप-एक जो हिमपात के ठीक ऊपर है, वहाँ तक का रास्ता साफ़ कर दिया है और फल बनाकर, रस्सियाँ बाँधकर तथा इंडियों से रास्ता चिह्नित कर, सभी बड़ी कठिनाइयों का जायजा ले लिया गया है। उन्होंने इस पर भी ध्यान दिलाया कि ग्लेशियर बरफ़ की नदी है और बरफ़ का गिरना अभी जारी है। हिमपात में अनियमित और

अध्याय 2- एवरेस्ट : मेरी शिखर यात्रा

अनिश्चित बदलाव के कारण अभी तक के किए गए सभी काम व्यर्थ हो सकते हैं और हमें रास्ता खोलने का काम दोबारा करना पड़ सकता है।

प्रश्न 2. हिमपात किस तरह होता है और उससे क्या-क्या परिवर्तन आते हैं?

उत्तर-बर्फ के खंडों का अव्यवस्थित ढंग से गिरना ही हिमपात कहलाता है। ग्लेशियर के बहने से बर्फ में हलचल मच जाती है। इस कारण बर्फ की बड़ी-बड़ी चट्टानें तत्काल गिर जाती हैं। इस अवसर पर स्थिति ऐसी खतरनाक हो जाती है कि धरातल पर दरार पड़ने की संभावना बढ़ जाती है। अक्सर बर्फ में गहरी-चौड़ी दरारें बन जाती हैं। हिमपात से पर्वतारोहियों की कठिनाइयाँ बहुत अधिक बढ़ जाती हैं।

प्रश्न 3. लेखिका ने तंबू में गिरे बरफ़ पिंड का वर्णन किस तरह किया है?

उत्तर-लेखिका ने तंबू में गिरे बरफ़ के पिंड का वर्णन करते हुए कहा है कि वह ल्होत्से की बरफ़ीली सीधी ढलान पर लगाए गए नाइलान के तंबू के कैम्प-तीन में थी। उसके तंबू में लोपसांग और तशारिंग उसके तंबू में थे। अचानक रात साढ़े बारह बजे उसके सिर में कोई सख्त चीज़ टकराई और उसकी नींद खुल गई। तभी एक जोरदार धमाका हुआ और उसे लगा कि एक ठंडी बहुत भारी चीज़ इसके शरीर को कुचलती चल रही थी। इससे उसे साँस लेने में कठिनाई होने लगी।

प्रश्न 4. लेखिका को देखकर 'की' हक्का-बक्का क्यों रह गया?

उत्तर-जय बचेद्री पाल का पर्वतारोही साथी था। उसे भी बचेद्री के साथ पर्वत-शिखर पर जाना था। शिखर कैम्प पर पहुँचने में उसे देर हो गई थी। वह सामान ढोने के कारण पीछे रह गया था। अतः बचेद्री उसके लिए चाय-जूस आदि लेकर उसे रास्ते में लिवाने के लिए पहुँची। जय को यह कल्पना नहीं थी कि बचेद्री उसकी चिंता करेगी और उसे लिवी लाने के लिए आएँगी। इसलिए जब उसने बचेद्री पाल को चाय-जूस लिए आया देखा तो वह हक्का-बक्का रह गया।

प्रश्न 5. एवरेस्ट पर चढ़ने के लिए कुल कितने कैम्प बनाए गए? उनका वर्णन कीजिए।

उत्तर-पाठ से ज्ञात होता है कि एवरेस्ट पर चढ़ाई के लिए कुल पाँच कैम्प बनाए गए। उनके दल का पहला कैम्प 6000 मीटर की ऊँचाई पर था जो हिमपात से ठीक ऊपर था। दूसरा कैम्प-चार 7900 मीटर की ऊँचाई पर बनाया गया था। कैम्प-तीन ल्होत्से की बरफ़ीली सीधी ढलान पर बनाया गया था। यहाँ नाइलोन के तंबू लगाए गए थे। एक

अध्याय 2- एवरेस्ट : मेरी शिखर यात्रा

कैंप साउथकोल पर बनाया गया था। यहीं से अभियान दल को एवरेस्ट पर चढ़ाई करनी थी। इसके अलावा एक बेस कैंप भी बनाया गया था।

प्रश्न 6. चढ़ाई के समय एवरेस्ट की चोटी की स्थिति कैसी थी?

उत्तर-जब बचेंद्री पाल एवरेस्ट की चोटी पर पहुँची तो वहाँ चारों ओर तेज़ हवा के कारण बर्फ़ उड़ रही थी। बर्फ़ इतनी अधिक थी कि सामने कुछ नहीं दिखाई दे रहा था। पर्वत की शंकु चोटी इतनी तंग थी कि दो आदमी वहाँ एक साथ खड़े नहीं हो सकते थे। नीचे हजारों मीटर तक ढलान ही ढलान थी। अतः वहाँ अपने आपको स्थिर खड़ा करना बहुत कठिन था। उन्होंने बर्फ़ के फावड़े से बर्फ़ तोड़कर अपने टिकने योग्य स्थान बनाया।

प्रश्न 7. सम्मिलित अभियान में सहयोग एवं सहायता की भावना का परिचय बचेंद्री के किस कार्य से मिलता है?

उत्तर-एवरेस्ट पर विजय पाने के अभियान के दौरान लेखिको बचेंद्री पाल अपने साथियों 'जय', की 'मीनू' के साथ चढ़ाई कर रही थी, परंतु वह इनसे पहले साउथ कोल कैंप पर जा पहुँची क्योंकि वे बिना ऑक्सीजन के भारी बोझ लादे चढ़ाई कर रहे थे। लेखिका ने दोपहर बाद इन सदस्यों की मदद करने के लिए एक थर्मस को जूस से और दूसरे को गरम चाय से भर लिया और बरफ़ीली हवा में कैंप से बाहर निकल कर उन सदस्यों की ओर नीचे उतरने लगी। उसके इस कार्य से सहयोग एवं सहायता की भावना का परिचय मिलता है।

(ग) निम्नलिखित के आशय स्पष्ट कीजिए-

प्रश्न 1. एवरेस्ट जैसे महान अभियान में खतरों को और कभी-कभी तो मृत्यु भी आदमी को सहज भाव से स्वीकार करनी चाहिए।

उत्तर-एवरेस्ट की सर्वोच्च चोटी पर चढ़ना एक महान अभियान है। इसमें पग-पग पर जान जाने का खतरा होता है। अतः यदि ऐसा कठिन कार्य करते हुए मृत्यु भी हो जाए, तो उसे सहज घटना के रूप में लेना चाहिए। बहुत हाय-तौबा नहीं मचानी चाहिए।

प्रश्न 2. सीधे धरातल पर दरार पड़ने का विचार और इस दरार का गहरे-चौड़े हिम-विदर में बदल जाने का मात्र खयाल ही बहुत डरावना था। इससे भी ज्यादा भयानक इस बात की जानकारी थी

अध्याय 2- एवरेस्ट : मेरी शिखर यात्रा

कि हमारे संपूर्ण प्रयास के दौरान हिमपात लगभग एक दर्जन आरोहियों और कुलियों को प्रतिदिन छूता रहेगा।

उत्तर-आशय यह है कि ग्लेशियरों के बहने से बरफ़ में हलचल होने से बरफ़ की बड़ी-बड़ी चट्टानें अचानक गिर जाती हैं। इससे धरातल पर दरार पड़ जाती है। यही दरारें हिम-विदर में बदल जाती हैं जो पर्वतारोहियों की मृत्यु का कारण बन जाती है। इसका ख्याल ही मन में भय पैदा कर देता है। दुर्भाग्य से यह भी जानकारी मिल गई थी कि इस अभियान दल को अपने अभियान के दौरान ऐसे हिमपात का सामना करना ही पड़ेगा।

प्रश्न 3. बिना उठे ही मैंने अपने थैले से दुर्गा माँ का चित्र और हनुमान चालीसा निकाला। मैंने इनको अपने साथ लाए लाल कपड़े में लपेटा, छोटी-सी पूजा-अर्चना की और इनको बरफ़ में दबा दिया। आनंद के इस क्षण में मुझे अपने माता पिता का ध्यान आया।

उत्तर-जब बचेंद्री पाल हिमालय की चोटी पर सफलतापूर्वक पहुँच गई तो उसने घुटने के बल बैठकर बर्फ़ को माथे से छुआ। बिना सिर नीचे झुकाए हुए ही अपने थैले से दुर्गा माँ का चित्र और हनुमान चालीसा निकाला। उसने इन्हें एक लाल कपड़े में लपेटा। थोड़ी सी पूजा की। फिर इस चित्र तथा हनुमान चालीसा को बर्फ़ में दबा दिया। उस समय उसे बहुत आनंद मिला। उसने प्रसन्नतापूर्वक अपने माता-पिता को याद किया।

भाषा अध्ययन

प्रश्न 1. इस पाठ में प्रयुक्त निम्नलिखित शब्दों की व्याख्या पाठ का संदर्भ देकर कीजिए-
निहारा है, धसकना, खिसकना, सागरमाथा, जायजा लेना, नौसिखिया

उत्तर-

निहारा है- बहुत ध्यान से विस्मय के साथ देखना।

लेखिका ने नमचे बाजार पहुँचकर एवरेस्ट पर चढ़ाई करने से पूर्व उसे निहारा।

धसकना- नीचे धंस या दब जाना।

बरफ़ की भारी चट्टानें जब बरफ़ीले धरातल पर गिरती हैं तो धरातल धसक जाता है।

इसका खयाल पर्वतारोहियों को भयभीत करने वाला होता है।

अध्याय 2- एवरेस्ट : मेरी शिखर यात्रा

खिसकना- धीरे-धीरे सरकना।

ग्लेशियरों के बहने से बरफ़ में हलचल मच जाती है और बड़ी-बड़ी चट्टानें खिसकने लगती हैं।

सागरमाथा- सागर का माथा अर्थात् एवरेस्ट।

लेखिका को एवरेस्ट का दूसरा नाम सागरमाथा, जो नेपालियों में पसंद है, पसंद आया।

जायजा लेना- अनुमान लगाना।

एवरेस्ट अभियान के समय अग्रिम दल ने पुल बनाकर, रस्सियाँ बाँधकर सभी बड़ी कठिनाइयों का जायजा ले लिया था।

नौसिखिया- नया सीखने वाला।

एवरेस्ट की चोटी पर चढ़ने वाले प्रथम व्यक्ति का गौरव पाने वाले तेनजिंग से लेखिका ने खुद को नौसिखिया कहा।

प्रश्न 2. निम्नलिखित पंक्तियों में उचित विराम-चिह्नों का प्रयोग कीजिए-

1. उन्होंने कहा तुम एक पक्की पर्वतीय लड़की लगती हो तुम्हें तो शिखर पर पहले ही प्रयास में पहुँच जाना चाहिए
2. क्या तुम भयभीत थीं
3. तुमने इतनी बड़ी जोखिम क्यों ली बचेंद्री

उत्तर-

1. उन्होंने कहा, “तुम एक पक्की पर्वतीय लड़की लगती हो। तुम्हें तो शिखर पर पहले ही प्रयास में पहुँच जाना चाहिए।”
2. “क्या तुम भयभीत थीं?”
3. “तुमने इतनी बड़ी जोखिम क्यों ली बचेंद्री ?”

प्रश्न 3. नीचे दिए उदाहरण के अनुसार निम्नलिखित शब्द-युग्मों का वाक्य में प्रयोग कीजिए-

उदाहरण- हमारे पास एक वॉकी-टॉकी थी।

उत्तर-

अध्याय 2- एवरेस्ट : मेरी शिखर यात्रा

- टेढ़ी-मेढ़ी- एवरेस्ट की बरफ़ीली चोटियाँ बरफ़ की टेढ़ी-मेढ़ी नदी-सी लग रही थीं।
- गहर-चौड़े- पहाड़ी रास्ते में पड़ने वाले गहरे-चौड़े नाले देखकर मन भयभीत हो रहा था।
- आसपास- रेगिस्तान में आसपास कोई भी पेड़ नहीं दिखाई दे रहा था।
- हक्का-बक्का- अचानक सेना द्वारा घेरे जाने से आतंकवादी हक्के-बक्के रह गए थे।
- इधर-उधर- जंगली रास्ते पर इधर-उधर देखकर चलना।
- लंबे-चौड़े- चुनाव के समय नेतागण बड़े लंबे-चौड़े वादे करके जनता को बहलाते हैं।

प्रश्न 4. उदाहरण के अनुसार विलोम शब्द बनाइए-

उदाहरण- अनुकूल-प्रतिकूल

1. नियमित – अनियमित
2. विख्यात – कुख्यात
3. आरोही – अवरोही
4. निश्चित – अनिश्चित
5. सुंदर – असुंदर, खराब

उत्तर-

1. नियमित – अनियमित
2. आरोही – अवरोही
3. सुंदर – असुंदर, खराब
4. विख्यात – कुख्यात
5. निश्चित – अनिश्चित

प्रश्न 5. निम्नलिखित शब्दों में उपयुक्त उपसर्ग लगाइए-

जैसे- पुत्र – सुपुत्र

वास व्यवस्थित

कूल गति

रोहण रक्षित

उत्तर-

आ + वास = आवास

अ + व्यवस्थित = अव्यवस्थित

अध्याय 2- एवरेस्ट : मेरी शिखर यात्रा

प्रति + कूल = प्रतिकूल

दुर् + गति = दुर्गति

अव + रोहण = अवरोहण

सु + रक्षित = सुरक्षित

प्रश्न 6. निम्नलिखित क्रिया विशेषणों का उचित प्रयोग करते हुए रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-
अगले दिन, कम समय में, कुछ देर बाद, सुबह तक

1. मैं यह कार्य कर लूंगा।
2. घिरने के ही वर्षा हो गई।
3. बहुत इतनी तरक्की कर ली।
4. नाडकसा को गाँव जाना था।

उत्तर-

1. मैं अगले दिन यह कार्य कर लूंगा।
2. बादल घिरने के कुछ देर बाद ही वर्षा हो गई।
3. उसने बहुत कम समय में इतनी तरक्की कर ली।
4. नाडकसा को सुबह तक गाँव जाना था।

योग्यता विस्तार

प्रश्न 1. इस पाठ में आए दस अंग्रेजी शब्दों का चयन कर उनके अर्थ लिखिए-

उत्तर-

1. बेस कैम्प – आधारभूत या मुख्य पड़ाव
2. ग्लेशियर – हिमनद, बरफ़ीली नदी
3. स्ट्रेचर – मरीजों को लाने-ले जाने का उपकरण
4. साउथ – दक्षिण
5. कुकिंग गैस – खाना पकाने वाली गैस
6. आक्सीजन – प्राणवायु, जीवनदायिनी गैस
7. कुली – बोझा उठाने वाले

अध्याय 2- एवरेस्ट : मेरी शिखर यात्रा

8. वॉकी-टॉकी – बात करने का एक उपकरण
9. सिलिंडर – बेलनाकार बर्तन
10. थर्मस – ठंडा या गरम रखने वाला बर्तन

प्रश्न 2.पर्वतारोहण से संबंधित दस चीजों के नाम लिखिए।

उत्तर-पर्वतारोहण से जुड़ी चीजें-

रस्सी, फावड़ा, आक्सीजन टैंट, बूँटा, वॉकी-टॉकी, थर्मस चाय, एल्यूमिनियम की सीढ़ी, बिस्तर, चाकू, हथौड़ा, कील, स्ट्रेचर आदि।

प्रश्न 3.तेनजिंग शेरपा की पहली चढ़ाई के बारे में जानकारी प्राप्त कीजिए।

उत्तर-छात्र स्वयं तेनजिंग के बारे में जानकारी प्राप्त करें।

प्रश्न 4.इस पर्वत का नाम 'एवरेस्ट' क्यों पड़ा? जानकारी प्राप्त कीजिए।

उत्तर-छात्र अपने भूगोल अध्यापक से स्वयं जानकारी प्राप्त करें।

परियोजना कार्य

प्रश्न 1.आगे बढ़ती भारतीय महिलाओं की पुस्तक पढ़कर उनसे संबंधित चित्रों का संग्रह कीजिए एवं संक्षिप्त जानकारी प्राप्त करके लिखिए-

(क) पी. टी. उषा

(ख) आरती साहा

(ग) किरण बेदी

उत्तर-छात्र स्वयं करें।

प्रश्न 2.रामधारी सिंह दिनकर का लेख-'हिम्मत और जिंदगी' पुस्तकालय से लेकर पढ़िए।

उत्तर-छात्र स्वयं करें।

अध्याय 2- एवरेस्ट : मेरी शिखर यात्रा

प्रश्न 3. 'मन के हारे हार है, मन के जीते जीत'-इस विषय पर कक्षा में परिचर्चा आयोजित कीजिए।

उत्तर-छात्र स्वयं करें।

अन्य पाठेतर हल प्रश्न

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. 'सागरमाथा' क्या है? लेखिका को यह नाम कैसा लगा?

उत्तर- 'सागरमाथा' एवरेस्ट का दूसरा नाम है। एवरेस्ट का यह नाम नेपालियों में प्रसिद्ध है। लेखिका को एवरेस्ट का यह नाम अच्छा लगा।

प्रश्न 2. एवरेस्ट अभियान दल कब रवाना हुआ? उससे पहले अग्रिम दल क्यों भेजा गया?

उत्तर- एवरेस्ट अभियान दल दिल्ली से काठमांडू के लिए 7 मार्च को हवाई जहाज से रवाना हुआ। उससे पहले अग्रिम दल को इसलिए भेजा गया ताकि 'बेस कैंप' पहुँचने से पहले दुर्गम हिमपात के रास्ते को साफ़ कर सके।

प्रश्न 3. लेखिका को बड़ा फूल (प्लूम) कैसा लगा? यह फूल कैसे बनता है?

उत्तर- लेखिका को बड़ा फूल (प्लूम) पर्वत-शिखर पर लहराता हुआ ध्वज-सा लग रहा था। यह फूल पर्वत की ऊपरी शिखर पर लगभग 150 किलोमीटर या इससे भी अधिक गति से हवाएँ चलने पर बनता है।

प्रश्न 4. वह कौन-सी बात थी, जो लेखिका को डराने के लिए काफ़ी थी?

उत्तर- पर्वत शिखरों पर 150 किलोमीटर या इससे भी अधिक गति से तूफ़ानी और बरफ़ीली हवाएँ चलती हैं। शिखर पर जाने वाले प्रत्येक व्यक्ति को दक्षिण पूर्वी पहाड़ी पर इन तूफ़ानों को झेलना पड़ता है। यह बात लेखिका को डराने के लिए काफ़ी थी।

प्रश्न 5.शेरपा कुली की मृत्यु कैसे हुई थी?

उत्तर-खंभु हिमपात पर जाने वाले अभियान दल के रास्ते के बाईं तरफ सीधी पहाड़ी धसक गई थी। इस कारण ल्होत्से की ओर से एक बहुत बड़ी चट्टान नीचे खिसक आई थी, जिससे एक शेरपा कुली की मृत्यु हो गई थी।

प्रश्न 6.एवरेस्ट अभियान की पहली बाधा कौन-सी थी? इस बाधा का पता लेखिका को कैसे चला?

उत्तर-एवरेस्ट अभियान की पहली बाधा खंभु हिमपात थी। लेखिका को इस बाधा का पता अग्रिम दल का नेतृत्व कर रहे उपनेता प्रेमचंद से चला।

प्रश्न 7.अग्रिमदल ने एवरेस्ट अभियान दल की मदद किस तरह की?

उत्तर-अग्रिम दल एवरेस्ट अभियान दल से पहले ही खंभु हिमपात तक पहुँच गया और वहाँ तक का रास्ता साफ़ कर दिया। उन्होंने पुल बनाकर, रस्सियाँ बाँधकर झंडियों से रास्ते को चिनिता करके सभी कठिनाइयों का जायजा ले लिया था।

प्रश्न 8.तीसरे दिन की किस सफलता को सुनकर कर्नल खुल्लर खुश हो रहे थे?

उत्तर-हिमपात से कैम्प तक की चढ़ाई के लिए तीसरा दिन नियत था। लेखिका रीता गोंबू के साथ आगे बढ़ रही थी तथा वह वॉकी-टॉकी से हरकदम की जानकारी कर्नल खुल्लर को दे रही थी। कर्नल खुल्लर यह जानकार खुश हुए कि कैम्प एक तक केवल दो महिलाएँ ही पहुँच सकी थी।

प्रश्न 9.लोपसांग ने लेखिका की जान किस तरह से बचाई ?

उत्तर-जब लेखिका अपने तंबू में बरफ़ में दबी थी तब लोपसांग ने अपनी स्विस् छुरी से तंबू का रास्ता साफ़ करने में जुट गए उन्होंने लेखिका के चारों ओर जमे कड़े बरफ़ की खुदाई की और लेखिका को बरफ़ की कब्र से खींच निकाला।

अध्याय 2- एवरेस्ट : मेरी शिखर यात्रा

प्रश्न 10. कर्नल खुल्लर ने किस कार्य को जबरदस्त साहसिक बताया?

उत्तर-लेखिका अपने दल के साथ एवरेस्ट अभियान पर जाती हुई 16 मई को सवेरे कैम्प-दो पर पहुँची। जिस शेरपा की टाँग टूटी थी उसे स्ट्रेचर पर लिटाकर नीचे लाए। इस कार्य को कर्नल खुल्लर ने इतनी ऊँचाई पर सुरक्षा कार्य का एक जबरदस्त साहसिक कार्य बताया।

प्रश्न 11. बर्चेद्रीपाल ने जूस और चाय लेकर नीचे जाने का जोखिम क्यों लिया?

उत्तर-शारीरिक रूप से स्वस्थ हैं इसलिए उन्हें अपने दल के सदस्यों की मदद करने का जोखिम उठाना चाहिए।

प्रश्न 12. लेखिका अंगदोरजी के साथ एवरेस्ट अभियान पर आगे क्यों चल पड़ी?

उत्तर-लेखिका बर्चेद्री पाल अंगदोरजी के साथ अभियान पर इसलिए चल पड़ी क्योंकि अंगदोरजी बिना आक्सीजन के चढ़ाई करने वाला था। इस कारण उसके पैर ठंडे पड़ जाते थे। वह ऊँचाई पर लंबे समय तक खुले में और रात्रि में शिखर कैम्प पर नहीं जाना चाहता था। उसके साथ कोई और जाने को तैयार न था।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. 15-16 मई, 1984 की किस घटना से लेखिका को आश्चर्य हुआ?

उत्तर-15-16 मई, 1984 को ल्होत्से की सीधी ढलान पर लगाए गए कैम्प में पर्वतारोहियों का दल ठहरा था। रात साढ़े बारह बजे एक लंबा बरफ़ का पिंड हमारे कैम्प के ठीक ऊपर ल्होत्से ग्लेशियर से टूटकर नीचे आ गिरा था और उसका विशाल हिमपुंज बना गया था। हिमखंडों, बरफ़ के टुकड़ों तथा जमीं हुई बरफ़ के इस विशालकाय पुंज ने, एक एक्सप्रेस रेलगाड़ी की तेज़ गति और भीषण गर्जना के साथ, सीधी ढलान से नीचे आते हुए कैम्प को तहस-नहस कर दिया। वास्तव में हर व्यक्ति को चोट लगी थी। यह एक आश्चर्य था कि किसी की मृत्यु नहीं हुई थी।

प्रश्न 2. साउथ कोल पहुँचते ही लेखिका तैयारियों में क्यों जुट गई और उसकी चिंता का कारण क्या था?

उत्तर-लेखिका जैसे साउथ कोल पहुँची, उसने अगले दिन की अपनी महत्वपूर्ण चढ़ाई की तैयारी शुरू कर दी। उसने खाना, कुकिंग गैस तथा कुछ ऑक्सीजन सिलिंडर इकट्ठे किए। जब दोपहर डेढ़ बजे बिस्सा आया, उसने

अध्याय 2- एवरेस्ट : मेरी शिखर यात्रा

लेखिका को चाय के लिए पानी गरम करते देखा। की, जय और मीनू अभी बहुत पीछे थे। वह चिंतित थी क्योंकि उसे अगले दिन उनके साथ ही चढ़ाई करनी थी। वे धीरे-धीरे आ रहे थे क्योंकि वे भारी बोझ लेकर और बिना ऑक्सीजन के चल रहे थे।

प्रश्न 3. साउथकोल से आगे बढ़ते हुए लेखिका को क्या-क्या सावधानियाँ बरतनी पड़ीं और क्यों?

उत्तर-अंगदोरजी के साथ साउथकोल से आगे बढ़ने पर लेखिका ने देखा कि बाहर हलकी-हलकी हवा चल रही थी और ठंड भी बहुत अधिक थी। लेखिका अपने आरोही उपस्कर में अच्छी स्थिति में थी। वह अंगदोरजी के साथ निश्चित गति से आगे बढ़ी जा रही थी। रास्ते में जमे हुए बरफ़ की सीधी व ढलाऊ चट्टानें सख्त और भुरभुरी जो शीशे की चादरों जैसी थीं। लेखिका को बरफ़ काटने के लिए फावड़े का इस्तेमाल करना पड़ा और सख्ती से फावड़ा चलाना पड़ा ताकि बरफ़ कट जाए। उसने चलते हुए उन खतरनाक स्थलों पर अत्यंत सावधानी से कदम उठाया।

प्रश्न 4. अंगदोरजी क्या सुनकर आनंदित हुए? उन्होंने लेखिका को क्या बताया?

उत्तर-साउथकोल कैम्प से अंगदोरजी के साथ लेखिका विपरीत परिस्थितियों में यात्रा करते हुए आगे बढ़ रही थी। वे दो घंटे से कम समय में ही शिखर कैम्प पर पहुँच गए। अंगदोरजी ने पीछे उससे मुड़कर देखा कहा कि क्या वह थक गई है। उसने जवाब दिया, ‘नहीं।’ जिसे सुनकर वे बहुत अधिक आश्चर्यचकित और आनंदित हुए। उन्होंने कहा कि पहलेवाले दल ने शिखर कैम्प पर पहुँचने में चार घंटे लगाए थे और यदि हम इसी गति से चलते रहे तो हम शिखर पर दोपहर एक बजे एक पहुँच जाएँगे।

प्रश्न 5. लेखिका ने अंगदोरजी के प्रति किस तरह धन्यवाद ज्ञापित किया? इस पर उनकी प्रतिक्रिया क्या थी?

उत्तर-एवरेस्ट के शिखर पर पहुँची भाव विभोर लेखिका ने ईश्वर और अपने माता-पिता के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने के बाद उठी और अपने दोनों हाथ जोड़कर अपने रज्जु-नेता अंगदोरजी के प्रति आदर भाव से झुकी। अंगदोरजी जिन्होंने उसे प्रोत्साहित किया और उसे लक्ष्य तक पहुँचाया। लेखिका ने उन्हें बिना ऑक्सीजन के एवरेस्ट की दूसरी चढ़ाई चढ़ने पर बधाई भी दी। उन्होंने गले से लगाया और उसके कानों में फुसफुसाए, “दीदी, तुमने अच्छी चढ़ाई की। मैं बहुत प्रसन्न हूँ।”

एवरेस्ट मेरी शिखर यात्रा पाठ की व्याख्या

पाठ – एवरेस्ट अभियान दल 7 मार्च को दिल्ली से काठमांडू के लिए हवाई जहाज़ से चल दिया। एक मज़बूत अग्रिम दल बहुत पहले ही चला गया था जिससे कि वह हमारे ‘बेस कैम्प’ पहुँचने से पहले दुर्गम हिमपात के रास्ते को साफ कर सके।

नमचे बाज़ार, शेरपालैंड का एक सर्वाधिक महत्वपूर्ण नगरीय क्षेत्र है। अधिकांश शेरपा इसी स्थान तथा यहीं के आसपास के गाँवों के होते हैं। यह नमचे बाज़ार ही था, जहाँ से मैंने सर्वप्रथम एवरेस्ट को निहारा, जो नेपालियों में ‘सागरमाथा’ के नाम से प्रसिद्ध है। मुझे यह नाम अच्छा लगा।

शब्दार्थ –

अभियान – चढ़ाई करने वाला

अग्रिम – पहला

दुर्गम – कठिन

हिमपात – बर्फ का गिरना

निहारा – देखा

व्याख्या – बचेंद्री पाल अपनी एवरेस्ट की चढ़ाई के सफर की बात करते हुए कहती हैं कि एवरेस्ट पर चढ़ाई करने वाला दल 7 मार्च को दिल्ली से हवाई जहाज़ से काठमांडू के लिए चल पड़ा था। उस दल से पहले ही एक मज़बूत दल बहुत पहले ही एवरेस्ट की चढ़ाई के लिए चला गया था जिससे कि वह बचेंद्री पाल वाले दल के ‘बेस कैम्प’ पहुँचने से पहले बर्फ के गिरने के कारण बने कठिन रास्ते को साफ कर सके। बचेंद्री पाल कहती हैं कि नमचे बाज़ार, शेरपालैंड का एक सर्वाधिक महत्वपूर्ण नगरीय क्षेत्र है। अधिकांश शेरपा इसी स्थान तथा यहीं के आसपास के गाँवों के होते हैं। यह नमचे बाज़ार ही था, जहाँ से बचेंद्री पाल ने सर्वप्रथम एवरेस्ट को देखा था, जो नेपालियों में ‘सागरमाथा’ के नाम से प्रसिद्ध है। बचेंद्री पाल को एवरेस्ट का यह नाम अच्छा लगा था।

पाठ – एवरेस्ट की तरफ गौर से देखते हुए, मैंने एक भारी बर्फ का बड़ा फूल (प्लूम) देखा, जो पर्वत-शिखर पर लहराता एक ध्वज-सा लग रहा था। मुझे बताया गया कि यह दृश्य शिखर की ऊपरी सतह के आसपास 150 किलोमीटर अथवा इससे भी अधिक की गति से हवा चलने के कारण बनता था, क्योंकि तेज़ हवा से सूखा बर्फ पर्वत पर उड़ता रहता था। बर्फ का यह ध्वज 10 किलोमीटर या इससे भी लंबा हो सकता था। शिखर पर जानेवाले प्रत्येक व्यक्ति को दक्षिण-पूर्वी पहाड़ी पर इन तूफानों को झेलना पड़ता था, विशेषकर खराब मौसम में। यह मुझे डराने के लिए काफ़ी था, फिर भी मैं एवरेस्ट के प्रति विचित्र रूप से आकर्षित थी और इसकी कठिनतम चुनौतियों का सामना करना चाहती थी।

शब्दार्थ –

विचित्र – विशेष

आकर्षित – मुग्ध

अध्याय 2- एवरेस्ट : मेरी शिखर यात्रा

व्याख्या – बचेद्री पाल कहती हैं कि जब वे एवरेस्ट की तरफ गौर से देख रही थी तब उन्होंने एक भारी बर्फ का बड़ा फूल (प्लूम) देखा, जो उस पर्वत-शिखर पर लहराता हुआ किसी एक ध्वज-सा लग रहा था। लोगों के द्वारा बचेद्री पाल को बताया गया कि यह दृश्य शिखर की ऊपरी सतह के आसपास 150 किलोमीटर अथवा इससे भी अधिक की गति से हवा चलने के कारण बनता था, क्योंकि तेज़ हवा से सुखी हुई बर्फ पर्वत पर उड़ती रहती है। बर्फ का यह ध्वज 10 किलोमीटर या इससे भी लंबा हो सकता है। उन्हें यह भी बताया गया कि शिखर पर जानेवाले प्रत्येक व्यक्ति को दक्षिण-पूर्वी पहाड़ी पर इन तूफानों को झेलना पड़ता है, विशेषकर जब मौसम खराब होता है। बचेद्री पाल कहती हैं कि यह सब बातें उन्हें डराने के लिए काफ़ी थी, फिर भी बचेद्री पाल कहती हैं कि एवरेस्ट के प्रति वे विशेष रूप से मुग्ध थी और इसकी कठिन से भी कठिन चुनौतियों का सामना करना चाहती थी।

पाठ – जब हम 26 मार्च को पैरिच पहुँचे, हमें हिम-स्खलन के कारण हुई एक शेरपा कुली की मृत्यु का दुःखद समाचार मिला। खुंभु हिमपात पर जानेवाले अभियान-दल के रास्ते के बाईं तरफ़ सीधी पहाड़ी के धसकने से, ल्होत्से की ओर से एक बहुत बड़ी बर्फ की चट्टान नीचे खिसक आई थी। सोलह शेरपा कुलियों के दल में से एक की मृत्यु हो गई और चार घायल हो गए थे।

इस समाचार के कारण अभियान दल के सदस्यों के चेहरों पर छाए अवसाद को देखकर हमारे नेता कर्नल खुल्लर ने स्पष्ट किया कि एवरेस्ट जैसे महान अभियान में खतरों को और कभी-कभी तो मृत्यु भी आदमी को सहज भाव से स्वीकार करनी चाहिए।

शब्दार्थ –

हिम-स्खलन – बर्फ का खिसकना

अवसाद – उदासी

व्याख्या – बचेद्री पाल कहती हैं कि जब उनका दल 26 मार्च को पैरिच पहुँचा तो उन्हें हमें बर्फ के खिसकने के कारण हुई एक शेरपा कुली की मृत्यु का दुःख भरा समाचार मिला। बचेद्री पाल कहती हैं कि खुंभु हिमपात पर जानेवाले अभियान-दल के रास्ते के बाईं तरफ़ सीधी पहाड़ी के धसकने से, ल्होत्से की ओर से एक बहुत बड़ी बर्फ की चट्टान नीचे खिसक आई थी। सोलह शेरपा कुलियों के दल में से एक की मृत्यु हो गई और चार घायल हो गए थे। इस समाचार के कारण बचेद्री पाल के अभियान दल के सदस्यों के चेहरों पर छाई उदासी को देखकर उनके दल के नेता कर्नल खुल्लर ने सभी सदस्यों को साफ़ – साफ़ कह दिया कि एवरेस्ट जैसे महान अभियान में खतरों को और कभी-कभी तो मृत्यु को भी आदमी को सहज भाव से स्वीकार करनी चाहिए। उनके कहने का अभिप्राय था कि एवरेस्ट पर चढ़ाई करना कोई आसान काम नहीं है, वहाँ पर जाना मौत के मुँह में कदम रखने के बराबर है।

पाठ – उपनेता प्रेमचंद, जो अग्रिम दल का नेतृत्व कर रहे थे, 26 मार्च को पैरिच लौट आए। उन्होंने हमारी पहली बड़ी बाधा खुंभु हिमपात की स्थिति से हमें अवगत कराया। उन्होंने कहा कि उनके दल ने कैप-एक (6000 मी.),

अध्याय 2- एवरेस्ट : मेरी शिखर यात्रा

जो हिमपात के ठीक ऊपर है, वहाँ तक का रास्ता साफ़ कर दिया है। उन्होंने यह भी बताया कि पुल बनाकर, रस्सियाँ बाँधकर तथा झंडियों से रास्ता चिह्नित कर, सभी बड़ी कठिनाइयों का जायज़ा ले लिया गया है। उन्होंने इस पर भी ध्यान दिलाया कि ग्लेशियर बर्फ की नदी है और बर्फ का गिरना अभी जारी है। हिमपात में अनियमित और अनिश्चित बदलाव के कारण अभी तक के किए गए सभी काम व्यर्थ हो सकते हैं और हमें रास्ता खोलने का काम दोबारा करना पड़ सकता है।

व्याख्या – बचेद्री पाल कहती हैं कि उपनेता प्रेमचंद, जो पहले वाले दल का नेतृत्व कर रहे थे, वे भी 26 मार्च को पैरिच लौट आए। वे बचेद्री पाल के दल के लिए एवरेस्ट की चढ़ाई में आने वाली समस्याओं को कम करने के लिए पहले ही एवरेस्ट की ओर बढ़ गए थे। बचेद्री पाल कहती हैं कि उन्होंने बचेद्री पाल के दल की पहली बड़ी समस्या बचेद्री पाल और उनके साथियों को खुंभु हिमपात की स्थिति से के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि उनके दल ने कैम्प-एक जो 6000 मी. की ऊँचाई पर है और जो हिमपात के ठीक ऊपर है, वहाँ तक का रास्ता साफ़ कर दिया है। उन्होंने बचेद्री पाल और उनके साथियों को यह भी बताया कि पुल बनाकर, रस्सियाँ बाँधकर तथा झंडियों से रास्ता को चिह्नित कर, सभी बड़ी कठिनाइयों का जायज़ा ले लिया गया है। उन्होंने बचेद्री पाल और उनके साथियों का ध्यान इस पर भी दिलाया कि ग्लेशियर बर्फ की नदी है और बर्फ का गिरना अभी जारी है। हिमपात में अनियमित और अनिश्चित बदलाव के कारण अभी तक के किए गए सभी काम व्यर्थ हो सकते हैं और उन लोगों को रास्ता खोलने का काम दोबारा करना पड़ सकता है।

पाठ – ‘बेस कैम्प’ में पहुँचने से पहले हमें एक और मृत्यु की खबर मिली। जलवायु अनुकूल न होने के कारण एक रसोई सहायक की मृत्यु हो गई थी। निश्चित रूप से हम आशाजनक स्थिति में नहीं चल रहे थे।

एवरेस्ट शिखर को मैंने पहले दो बार देखा था, लेकिन एक दूरी से। बेस कैम्प पहुँचाने पर दूसरे दिन मैंने एवरेस्ट पर्वत तथा इसकी अन्य श्रेणियों को देखा। मैं भौचक्की होकर खड़ी रह गई और एवरेस्ट, ल्होत्से और नुत्से की ऊँचाइयों से घिरी, बर्फ़ीली टेढ़ी-मेढ़ी नदी को निहारती रही।

शब्दार्थ –

आशाजनक – आशा उत्पन्न करने वाला

भौचक्की – हैरान

व्याख्या – बचेद्री पाल कहती हैं कि ‘बेस कैम्प’ में पहुँचने से पहले उन्हें और उनके साथियों को एक और मृत्यु की खबर मिली। जलवायु के सही न होने के कारण एक रसोई सहायक की मृत्यु हो गई थी। निश्चित रूप से अब बचेद्री पाल और उनके साथी आशा उत्पन्न करने स्थिति में नहीं चल रहे थे। सभी घबराए हुए थे। एवरेस्ट शिखर को बचेद्री पाल ने पहले दो बार देखा था, लेकिन एक दूरी से। बेस कैम्प पहुँचाने पर दूसरे दिन बचेद्री पाल ने एवरेस्ट पर्वत तथा इसकी अन्य श्रेणियों को देखा। बचेद्री पाल हैरान होकर खड़ी रह गई और एवरेस्ट, ल्होत्से और नुत्से की ऊँचाइयों से घिरी, बर्फ़ीली टेढ़ी-मेढ़ी नदी को निहारती रही।

अध्याय 2- एवरेस्ट : मेरी शिखर यात्रा

पाठ – हिमपात अपने आपमें एक तरह से बर्फ के खंडों का अव्यवस्थित ढंग से गिरना ही था। हमें बताया गया कि ग्लेशियर के बहने से अकसर बर्फ में हलचल हो जाती थी, जिससे बड़ी-बड़ी बर्फ की चट्टानें तत्काल गिर जाया करती थीं और अन्य कारणों से भी अचानक प्रायः खतरनाक स्थिति धारण कर लेती थीं। सीधे धरातल पर दरार पड़ने का विचार और इस दरार का गहरे-चैड़े हिम-विदर में बदल जाने का मात्र खयाल ही बहुत डरावना था। इससे भी ज्यादा भयानक इस बात की जानकारी थी कि हमारे संपूर्ण प्रवास के दौरान हिमपात लगभग एक दर्जन आरोहियों और कुलियों को प्रतिदिन छूता रहेगा।

शब्दार्थ –

खंडों – टुकड़ों

अव्यवस्थित – बिना किसी व्यवस्था के

तत्काल – अचानक

हिम-विदर – दरार

संपूर्ण प्रवास – पुरे सफर के दौरान

व्याख्या – बचेद्री पाल कहती हैं कि हिमपात अपने आपमें एक तरह से बर्फ के टुकड़ों का बिना किसी व्यवस्था के गिरना होता है। बचेद्री पाल और उनके साथियों को बताया गया कि ग्लेशियर के बहने से अकसर बर्फ में हलचल हो जाती है, जिससे बड़ी-बड़ी बर्फ की चट्टानें अचानक से गिर जाया करती हैं और अन्य कारणों से भी अचानक हमेशा ही खतरनाक स्थिति धारण कर लेती है। सीधे धरातल पर दरार पड़ने का विचार और इस दरार का गहरे-चैड़े गढ़ों और दरारों में बदल जाने का केवल खयाल ही बहुत बचेद्री पाल और उनके साथी डर गए थे। बचेद्री पाल कहती हैं कि इससे भी ज्यादा भयानक इस बात की जानकारी थी कि उनके पुरे सफर के दौरान हिमपात लगभग एक दर्जन चढ़ाई करने वालों और कुलियों को हर दिन छूता रहेगा।

पाठ – दूसरे दिन नए आनेवाले अपने अधिकांश सामान को हम हिमपात के आधे रास्ते तक ले गए। डॉ मीनू मेहता ने हमें अल्यूमिनियम की सीढ़ियों से अस्थायी पुलों का बनाना, लठ्ठों और रस्सियों का उपयोग, बर्फ की आड़ी-तिरछी दीवारों पर रस्सियों को बाँधना और हमारे अग्रिम दल के अभियांत्रिकी कार्यों के बारे में हमें विस्तृत जानकारी दी।

तीसरा दिन हिमपात से कैंप-एक तक सामान ढोकर चढ़ाई का अभ्यास करने के लिए निश्चित था। रीता गोंबू तथा मैं साथ-साथ चढ़ रहे थे। हमारे पास एक वॉकी-टॉकी था, जिससे हम अपने हर कदम की जानकारी बेस कैंप पर दे रहे थे। कर्नल खुल्लर उस समय खुश हुए, जब हमने उन्हें अपने पहुँचने की सूचना दी क्योंकि कैंप-एक पर पहुँचने वाली केवल हम दो ही महिलाएँ थीं।

शब्दार्थ –

अधिकांश – ज्यादातर

अभियांत्रिकी – तकनीकी

विस्तृत – विस्तार

व्याख्या – बचेंद्री पाल कहती हैं कि दूसरे दिन नए आने वाले अपने ज्यादातर सामान को वे हिमपात के आधे रास्ते तक ले गए। डॉ मीनू मेहता ने बचेंद्री पाल और उनके साथियों को अल्यूमिनियम की सीढ़ियों से अस्थायी पुलों का बनाना, लठ्ठों और रस्सियों का उपयोग, बर्फ की आड़ी-तिरछी दीवारों पर रस्सियों को बाँधना और उनके पहले दल के तकनीकी कार्यों के बारे में उन्हें विस्तार से सारी जानकारी दी। बचेंद्री पाल कहती हैं कि उनका तीसरा दिन हिमपात से कैम्प-एक तक सामान ढोकर चढ़ाई का अभ्यास करने के लिए पहले से ही निश्चित था। रीता गोंबू तथा बचेंद्री पाल साथ-साथ चढ़ रहे थे। उनके पास एक वॉकी-टॉकी था, जिससे वे अपने हर कदम की जानकारी बेस कैम्प पर दे रहे थे। कर्नल खुल्लर उस समय खुश हुए, जब रीता गोंबू तथा बचेंद्री पाल ने उन्हें अपने पहुँचने की सूचना दी क्योंकि कैम्प-एक पर पहुँचने वाली केवल वे दो ही महिलाएँ थीं।

पाठ – अंगदोरजी, लोपसांग और गगन बिस्सा अंततः साउथ कोल पहुँच गए और 29 अप्रैल को 7900 मीटर पर उन्होंने कैम्प-चार लगाया। यह संतोषजनक प्रगति थी।

जब अप्रैल में मैं बेस कैम्प में थी, तेनजिंग अपनी सबसे छोटी सुपुत्री डेकी के साथ हमारे पास आए थे। उन्होंने इस बात पर विशेष महत्त्व दिया कि दल के प्रत्येक सदस्य और प्रत्येक शेरपा कुली से बातचीत की जाए। जब मेरी बारी आई, मैंने अपना परिचय यह कहकर दिया कि मैं बिल्कुल ही नौसिखिया हूँ और एवरेस्ट मेरा पहला अभियान है। तेनजिंग हँसे और मुझसे कहा कि एवरेस्ट उनके लिए भी पहला अभियान है, लेकिन यह भी स्पष्ट किया कि शिखर पर पहुँचने से पहले उन्हें सात बार एवरेस्ट पर जाना पड़ा था। फिर अपना हाथ मेरे कंधे पर रखते हुए उन्होंने कहा, ‘तुम एक पक्की पर्वतीय लड़की लगती हो। तुम्हें तो शिखर पर पहले ही प्रयास में पहुँच जाना चाहिए।’

शब्दार्थ –

संतोषजनक – राहत भरा

नौसिखिया – नया सीखने वाला

व्याख्या – बचेंद्री पाल कहती हैं कि अंगदोरजी, लोपसांग और गगन बिस्सा अंततः साउथ कोल पहुँच गए और 29 अप्रैल को 7900 मीटर पर उन्होंने कैम्प-चार लगाया। यह सब बचेंद्री पाल और उनके साथियों के लिए राहत भरा कार्य था जो उन्हें खुशी दे रहा था। जब अप्रैल में बचेंद्री पाल कैम्प बेस में थी, तेनजिंग अपनी सबसे छोटी सुपुत्री डेकी के साथ उनके पास आए थे। उन्होंने इस बात पर विशेष महत्त्व दिया कि दल के प्रत्येक सदस्य और प्रत्येक शेरपा कुली से बातचीत की जाए। बचेंद्री पाल कहती हैं कि जब उनकी बारी आई, तो उन्होंने अपना परिचय यह कहकर दिया कि वे इस चढ़ाई के लिए बिल्कुल ही नई सीखने वाली हैं और एवरेस्ट उनका पहला अभियान है। तेनजिंग हँसे और बचेंद्री पाल से कहा कि एवरेस्ट उनके लिए भी पहला अभियान है, लेकिन यह भी स्पष्ट किया कि शिखर पर पहुँचने से पहले उन्हें सात बार एवरेस्ट पर जाना पड़ा था। फिर अपना हाथ बचेंद्री पाल के कंधे पर

अध्याय 2- एवरेस्ट : मेरी शिखर यात्रा

रखते हुए उन्होंने कहा कि बचेद्री पाल एक पक्की पर्वतीय लड़की लगती है। उसे तो शिखर पर पहले ही प्रयास में पहुँच जाना चाहिए।

पाठ – 15-16 मई 1984 को बुद्ध पूर्णिमा के दिन मैं ल्होत्से की बर्फ़ीली सीधी ढलान पर लगाए गए सुंदर रंगीन नाइलॉन के बने तंबू के कैम्प-तीन में थी। कैम्प में 10 और व्यक्ति थे। लोपसांग, तशारिंग मेरे तंबू में थे, एन.डी. शेरपा तथा और आठ अन्य शरीर से मज़बूत और ऊँचाइयों में रहने वाले शेरपा दूसरे तम्बुओं में थे। मैं गहरी नींद में सोई हुई थी कि रात में 12.30 बजे के लगभग मेरे सिर के पिछले हिस्से में किसी एक सख्त चीज़ के टकराने से मेरी नींद अचानक खुल गई और साथ ही एक शोरदार धमाका भी हुआ। तभी मुझे महसूस हुआ कि एक ठंडी, बहुत भारी कोई चीज़ मेरे शरीर पर से मुझे कुचलती हुई चल रही है। मुझे साँस लेने में भी कठिनाई हो रही थी।

व्याख्या – बचेद्री पाल कहती हैं कि 15-16 मई 1984 को बुद्ध पूर्णिमा के दिन वह ल्होत्से की बर्फ़ीली सीधी ढलान पर लगाए गए सुंदर रंगीन नाइलॉन के बने तंबू के कैम्प-तीन में थी। कैम्प में 10 और व्यक्ति थे। लोपसांग, तशारिंग बचेद्री पाल के तंबू में थे, एन.डी. शेरपा तथा और आठ अन्य शरीर से मज़बूत और ऊँचाइयों में रहने वाले शेरपा दूसरे तम्बुओं में थे। बचेद्री पाल कहती हैं कि वह गहरी नींद में सोई हुई थी कि रात में 12.30 बजे के लगभग उनके सिर के पिछले हिस्से में किसी एक सख्त चीज़ के टकराने से उनकी नींद अचानक खुल गई और साथ ही एक ज़ोरदार धमाका भी हुआ। तभी बचेद्री पाल को महसूस हुआ कि एक ठंडी, बहुत भारी कोई चीज़ उनके शरीर पर से उन्हें कुचलती हुई चल रही है। उन्हें साँस लेने में भी कठिनाई हो रही थी।

पाठ – यह क्या हो गया था? एक लंबा बर्फ का पिंड हमारे कैम्प के ठीक ऊपर ल्होत्से ग्लेशियर से टूटकर नीचे आ गिरा था और उसका विशाल हिमपुंज बन गया था। हिमखंडों, बर्फ के टुकड़ों तथा जमी हुई बर्फ के इस विशालकाय पुंज ने, एक एक्सप्रेस रेलगाड़ी की तेज़ गति और भीषण गर्जना के साथ, सीधी ढलान से नीचे आते हुए हमारे कैम्प को तहस-नहस कर दिया। वास्तव में हर व्यक्ति को चोट लगी थी। यह एक आश्चर्य था कि किसी की मृत्यु नहीं हुई थी।

लोपसांग अपनी स्विस् छुरी की मदद से हमारे तंबू का रास्ता साफ़ करने में सफल हो गए थे और तुरंत ही अत्यंत तेज़ी से मुझे बचाने की कोशिश में लग गए। थोड़ी-सी भी देर का सीधा अर्थ था मृत्यु। बड़े-बड़े हिमपिंडों को मुश्किल से हटाते हुए उन्होंने मेरे चारों तरफ की कड़े जमे बर्फ की खुदाई की और मुझे उस बर्फ की कब्र से निकाल बाहर खींच लाने में सफल हो गए।

शब्दार्थ –

हिमपुंज – बर्फ का टुकड़ा

भीषण गर्जना – भयानक आवाज़

व्याख्या – बचेद्री पाल कहती हैं कि उन्हें कुछ समझ में नहीं आ रहा था कि यह क्या हो गया था? एक लंबा बर्फ का पिंड उनके कैम्प के ठीक ऊपर ल्होत्से ग्लेशियर से टूटकर नीचे आ गिरा था और उसका एक बहुत बड़ा बर्फ

अध्याय 2- एवरेस्ट : मेरी शिखर यात्रा

का टुकड़ा बन गया था। हिमखंडों, बर्फ के टुकड़ों तथा जमी हुई बर्फ के इस विशालकाय टुकड़े ने, एक एक्सप्रेस रेलगाड़ी की तज़ गति और भयानक आवाज़ के साथ, सीधी ढलान से नीचे आते हुए हमारे कैम्प को पूरी तरह नष्ट कर दिया। वास्तव में हर व्यक्ति को चोट लगी थी। यह एक आश्चर्य था कि किसी की मृत्यु नहीं हुई थी। लोपसांग अपनी स्विस् छुरी की मदद से बचेद्री पाल और उनके साथियों के तंबू का रास्ता साफ़ करने में सफल हो गए थे और तुरंत ही बहुत तेज़ी से बचेद्री पाल को बचाने की कोशिश में लग गए। बचेद्री पाल कहती हैं कि थोड़ी-सी भी देर का सीधा अर्थ था मृत्यु। बड़े-बड़े बर्फ के टुकड़ों को मुश्किल से हटाते हुए उन्होंने बचेद्री पाल के चारों तरफ की कड़ी जमी बर्फ की खुदाई की और बचेद्री पाल को उस बर्फ की कब्र से निकाल कर बाहर खींच लाने में सफल हो गए।

पाठ – सुबह तक सारे सुरक्षा दल आ गए थे और 16 मई को प्रातः 8 बजे तक हम प्रायः सभी कैम्प-दो पर पहुँच गए थे। जिस शेरपा की टाँग की हड्डी टूट गई थी, उसे एक खुद के बनाए स्ट्रेचर पर लिटाकर नीचे लाए। हमारे नेता कर्नल खुल्लर के शब्दों में, “यह इतनी ऊँचाई पर सुरक्षा-कार्य का एक ज़बरदस्त साहसिक कार्य था।” सभी नौ पुरुष सदस्यों को चोटों अथवा टूटी हड्डियों आदि के कारण बेस कैम्प में भेजना पड़ा। तभी कर्नल खुल्लर मेरी तरफ मुड़कर कहने लगे, “क्या तुम भयभीत थीं?”

“जी हाँ।”

“क्या तुम वापिस जाना चाहोगी?”

“नहीं”, मैंने बिना किसी हिचकिचाहट के उत्तर दिया।

जैसे ही मैं साउथ कोल कैम्प पहुँची, मैंने अगले दिन की अपनी महत्वपूर्ण चढ़ाई की तैयारी शुरू कर दी। मैंने खाना, कुकिंग गैस तथा कुछ ऑक्सीजन सिलिंडर इकट्ठे किए। जब दोपहर डेढ़ बजे बिस्सा आया, उसने मुझे चाय के लिए पानी गरम करते देखा। की, जय और मीनू अभी बहुत पीछे थे। मैं चिंतित थी क्योंकि मुझे अगले दिन उनके साथ ही चढ़ाई करनी थी। वे धीरे-धीरे आ रहे थे क्योंकि वे भारी बोझ लेकर और बिना ऑक्सीजन के चल रहे थे।

शब्दार्थ –

साहसिक कार्य – साहस से भरा कार्य

व्याख्या – बचेद्री पाल कहती हैं कि अगली सुबह तक सारे सुरक्षा दल आ गए थे और 16 मई को प्रातः 8 बजे तक वे सभी कैम्प-दो पर पहुँच गए थे। बचेद्री पाल कहती हैं कि जिस शेरपा की टाँग की हड्डी टूट गई थी, उसे एक खुद के बनाए स्ट्रेचर पर लिटाकर नीचे लाया गया। बचेद्री पाल और उनके दल के नेता कर्नल खुल्लर ने पिछली रात को हुए हादसे को उनके शब्दों में कुछ इस तरह कहा कि यह इतनी ऊँचाई पर सुरक्षा-कार्य का एक अत्यंत साहस से भरा कार्य था। बचेद्री पाल कहती हैं कि सभी नौ पुरुष सदस्यों को जिन्हें चोटें आई थी और हड्डियां टूटी थी उन्हें बेस कैम्प में भेजना पड़ा। तभी कर्नल खुल्लर बचेद्री पाल की तरफ मुड़े और कहने लगे कि क्या वह डरी हुई है? इसके उत्तर में बचेद्री पाल ने हाँ में उत्तर दिया। कर्नल खुल्लर के फिर से पूछने पर कि क्या वह वापिस

अध्याय 2- एवरेस्ट : मेरी शिखर यात्रा

जाना चाहती है? इस बार बचेंद्री पाल ने बिना किसी हिचकिचाहट के उत्तर दिया कि वह वापिस नहीं जाना चाहती। जैसे ही बचेंद्री पाल साउथ कोल कैम्प पहुँची, उन्होंने अगले दिन की अपनी महत्वपूर्ण चढ़ाई की तैयारी शुरू कर दी। बचेंद्री पाल ने खाना, कुकिंग गैस तथा कुछ ऑक्सीजन सिलिंडर इकट्ठे किए। जब दोपहर डेढ़ बजे बिस्सा आया, तो उसने बचेंद्री पाल को चाय के लिए पानी गरम करते देखा। की, जय और मीनू अभी बहुत पीछे थे। बचेंद्री पाल चिंतित थी क्योंकि उन्हें अगले दिन उनके साथ ही चढ़ाई करनी थी। वे धीरे-धीरे आ रहे थे क्योंकि वे भारी बोझ लेकर और बिना ऑक्सीजन के चल रहे थे।

पाठ – दोपहर बाद मैंने अपने दल के दूसरे सदस्यों की मदद करने और अपने एक थरमस को जूस से और दूसरे को गरम चाय से भरने के लिए नीचे जाने का निश्चय किया। मैंने बर्फ़ीली हवा में ही तंबू से बाहर कदम रखा। जैसे ही मैं कैम्प क्षेत्र से बाहर आ रही थी मेरी मुलाकात मीनू से हुई। की और जय अभी कुछ पीछे थे। मुझे जय जेनेवा स्पर की चोटी के ठीक नीचे मिला। उसने कृतज्ञतापूर्वक चाय वगैरह पी लेकिन मुझे और आगे जाने से रोकने की कोशिश की। मगर मुझे की से भी मिलना था। थोड़ा-सा और आगे नीचे उतरने पर मैंने की को देखा। वह मुझे देखकर हक्का-बक्का रह गया।

“तुमने इतनी बड़ी जोखिम क्यों ली बचेंद्री?”

मैंने उसे दृढ़तापूर्वक कहा, “मैं भी औरों की तरह एक पर्वतारोही हूँ, इसीलिए इस दल में आई हूँ। शारीरिक रूप से मैं ठीक हूँ। इसलिए मुझे अपने दल के सदस्यों की मदद क्यों नहीं करनी चाहिए।” की हँसा और उसने पेय पदार्थ से प्यास बुझाई, लेकिन उसने मुझे अपना किट ले जाने नहीं दिया।

थोड़ी देर बाद साउथ कोल कैम्प से लहाटू और बिस्सा हमें मिलने नीचे उतर आए। और हम सब साउथ कोल पर जैसी भी सुरक्षा और आराम की जगह उपलब्ध थी, उस पर लौट आए। साउथ कोल ‘पृथ्वी पर बहुत अधिक कठोर’ जगह के नाम से प्रसिद्ध है।

शब्दार्थ –

हक्का-बक्का – चौंकना

व्याख्या – बचेंद्री पाल कहती हैं कि दोपहर बाद उन्होंने अपने दल के दूसरे सदस्यों की मदद करने और अपने एक थरमस को जूस से और दूसरे को गरम चाय से भरने के लिए नीचे जाने का निश्चय किया। उन्होंने बर्फ़ीली हवा में ही तंबू से बाहर कदम रखा। बचेंद्री पाल कहती हैं कि जैसे ही वह कैम्प क्षेत्र से बाहर आ रही थी उनकी मुलाकात मीनू से हुई। की और जय अभी कुछ पीछे थे। बचेंद्री पाल को जय जेनेवा स्पर की चोटी के ठीक नीचे मिला। उसने बचेंद्री पाल के द्वारा लाई गई चाय वगैरह पी लेकिन बचेंद्री पाल को और आगे जाने से रोकने की कोशिश भी की। मगर बचेंद्री पाल को की से भी मिलना था। थोड़ा-सा और आगे नीचे उतरने पर उन्होंने की को देखा। की बचेंद्री पाल को देखकर चौंक गया और उसने बचेंद्री पाल से कहा कि उसने इतना बड़ा जोखिम क्यों उठाया? बचेंद्री पाल ने भी उसे दृढ़तापूर्वक कहा कि वह भी औरों की तरह एक पर्वतारोही है, इसीलिए वह इस दल में आई हुई है। शारीरिक रूप से वह बिल्कुल ठीक है। इसलिए उसे अपने दल के सदस्यों की मदद क्यों नहीं

अध्याय 2- एवरेस्ट : मेरी शिखर यात्रा

करनी चाहिए। बचेंद्री पाल की बात को सुन कर की हँसा और उसने पेय पदार्थ से प्यास बुझाई, लेकिन उसने बचेंद्री पाल को अपना किट ले जाने नहीं दिया। बचेंद्री पाल कहती हैं कि थोड़ी देर बाद साउथ कोल कैम्प से ल्हाटू और बिस्सा उनसे मिलने नीचे उतर आए। और वे सब साउथ कोल पर जैसी भी सुरक्षा और आराम की जगह उपलब्ध थी, उस पर लौट आए। बचेंद्री पाल कहती हैं कि साउथ कोल 'पृथ्वी पर बहुत अधिक कठोर' जगह के नाम से प्रसिद्ध है।

पाठ – अगले दिन मैं सुबह चार बजे उठ गई। बर्फ पिघलाया और चाय बनाई, कुछ बिस्कुट और आधी चाँकलेट का हल्का नाश्ता करने के बाद मैं लगभग साढ़े पाँच बजे अपने तंबू से निकल पड़ी। अंगदोरजी बाहर खड़ा था और कोई आसपास नहीं था।

अंगदोरजी बिना ऑक्सीजन के ही चढ़ाई करनेवाला था। लेकिन इसके कारण उसके पैर ठंडे पड़ जाते थे। इसलिए वह ऊँचाई पर लंबे समय तक खुले में और रात्रि में शिखर कैम्प पर नहीं जाना चाहता था। इसलिए उसे या तो उसी दिन चोटी तक चढ़कर साउथ कोल पर वापस आ जाना था अथवा अपने प्रयास को छोड़ देना था। वह तुरंत ही चढ़ाई शुरू करना चाहता था... और उसने मुझसे पूछा, क्या मैं उसके साथ जाना चाहूँगी? एक ही दिन में साउथ कोल से चोटी तक जाना और वापस आना बहुत कठिन और श्रमसाध्य होगा! इसके अलावा यदि अंगदोरजी के पैर ठंडे पड़ गए तो उसके लौटकर आने का भी जोखिम था। मुझे फिर भी अंगदोरजी पर विश्वास था और साथ-साथ मैं आरोहण की क्षमता और कर्मठता के बारे में भी आश्वस्त थी। अन्य कोई भी व्यक्ति इस समय साथ चलने के लिए तैयार नहीं था।

व्याख्या – बचेंद्री पाल कहती हैं कि अगले दिन वह सुबह चार बजे उठी। उसने बर्फ को पिघलाया और चाय बनाई, कुछ बिस्कुट और आधी चाँकलेट का हल्का नाश्ता करने के बाद वह लगभग साढ़े पाँच बजे अपने तंबू से निकल पड़ी। बचेंद्री पाल ने देखा कि अंगदोरजी बाहर खड़ा था और कोई भी आसपास नहीं था। अंगदोरजी बिना ऑक्सीजन के ही चढ़ाई करनेवाला था। लेकिन इसके कारण उसके पैर ठंडे पड़ जाते थे। इसलिए वह ऊँचाई पर लंबे समय तक खुले में और रात्रि में शिखर कैम्प पर नहीं जाना चाहता था। बचेंद्री पाल कहती हैं कि इसलिए उसे या तो उसी दिन चोटी तक चढ़कर साउथ कोल पर वापस आ जाना था अथवा बिना ऑक्सीजन के चढ़ाई करने की अपनी कोशिश को छोड़ देना था। बचेंद्री पाल कहती हैं कि वह तुरंत ही चढ़ाई शुरू करना चाहता था... और उसने बचेंद्री पाल से पूछा, क्या वह उसके साथ जाना चाहेगी? बचेंद्री पाल जानती थी कि एक ही दिन में साउथ कोल से चोटी तक जाना और वापस आना बहुत कठिन और बहुत मेहनत का काम होगा! इसके अलावा यदि अंगदोरजी के पैर ठंडे पड़ गए तो उसके लौटकर आने का भी जोखिम था। बचेंद्री पाल को फिर भी अंगदोरजी पर विश्वास था और साथ-साथ बचेंद्री पाल को उसके चढ़ने की क्षमता और काम के प्रति उसकी कुशलता के बारे में भी विश्वास था। बचेंद्री पाल कहती हैं कि अन्य कोई भी व्यक्ति इस समय उसके साथ चलने के लिए तैयार नहीं था।

अध्याय 2- एवरेस्ट : मेरी शिखर यात्रा

पाठ – सुबह 6.20 पर जब अंगदोरजी और मैं साउथ कोल से बाहर आ निकले तो दिन ऊपर चढ़ आया था। हलकी-हलकी हवा चल रही थी, लेकिन ठंड भी बहुत अधिक थी। मैं अपने आरोही उपस्कर में काफ़ी सुरक्षित और गरम थी। हमने बगैर रस्सी के ही चढ़ाई की। अंगदोरजी एक निश्चित गति से ऊपर चढ़ते गए और मुझे भी उनके साथ चलने में कोई कठिनाई नहीं हुई।

जमे हुए बर्फ की सीधी व ढलाऊ चट्टानें इतनी सख्त और भुरभुरी थीं, मानो शीशे की चादरें बिछी हों। हमें बर्फ काटने के फावड़े का इस्तेमाल करना ही पड़ा और मुझे इतनी सख्ती से फावड़ा चलाना पड़ा जिससे कि उस जमे हुए बर्फ की धरती को फावड़े के दाँते काट सके। मैंने उन खतरनाक स्थलों पर हर कदम अच्छी तरह सोच-समझकर उठाया।

व्याख्या – बचेंद्री पाल कहती हैं कि सुबह 6:20 पर जब अंगदोरजी और वह साउथ कोल से बाहर निकले तो दिन ऊपर चढ़ आया था। हल्की-हल्की हवा चल रही थी, लेकिन ठंड भी बहुत अधिक थी। बचेंद्री पाल अपने चढ़ाई के आवश्यक सामग्री को काफ़ी सुरक्षित और सही स्थिति में रखे हुई थी। बचेंद्री पाल और उनके साथियों ने बगैर रस्सी के ही चढ़ाई की। अंगदोरजी एक निश्चित गति से ऊपर चढ़ते गए और बचेंद्री पाल को भी उनके साथ चलने में कोई कठिनाई नहीं हुई। बचेंद्री पाल कहती हैं कि जमे हुए बर्फ की सीधी व ढलाऊ चट्टानें इतनी सख्त और भुरभुरी थीं, ऐसा लगता था मानो शीशे की चादरें बिछी हों। उन सभी को बर्फ काटने के फावड़े का इस्तेमाल करना ही पड़ा और बचेंद्री पाल कहती हैं कि उन्हें इतनी सख्ती से फावड़ा चलाना पड़ा जिससे कि उस जमे हुए बर्फ की धरती को फावड़े के दाँते काट सके। बचेंद्री पाल कहती हैं कि उन्होंने उन खतरनाक स्थलों पर हर कदम अच्छी तरह सोच-समझकर उठाया। क्योंकि वहाँ एक छोटी सी भी गलती मौत का कारण बन सकती थी।

पाठ – दो घंटे से कम समय में ही हम शिखर कैम्प पर पहुँच गए। अंगदोरजी ने पीछे मुड़कर देखा और मुझसे कहा कि क्या मैं थक गई हूँ। मैंने जवाब दिया, “नहीं।” जिसे सुनकर वे बहुत अधिक आश्चर्यचकित और आनंदित हुए। उन्होंने कहा कि पहलेवाले दल ने शिखर कैम्प पर पहुँचने में चार घंटे लगाए थे और यदि हम इसी गति से चलते रहे तो हम शिखर पर दोपहर एक बजे एक पहुँच जाएँगे।

ल्हाटू हमारे पीछे-पीछे आ रहा था और जब हम दक्षिणी शिखर के नीचे आराम कर रहे थे, वह हमारे पास पहुँच गया। थोड़ी-थोड़ी चाय पीने के बाद हमने फिर चढ़ाई शुरू की। ल्हाटू एक नाइलॉन की रस्सी लाया था। इसलिए अंगदोरजी और मैं रस्सी के सहारे चढ़े, जबकि ल्हाटू एक हाथ से रस्सी पकड़े हुए बीच में चला। उसने रस्सी अपनी सुरक्षा की बजाय हमारे संतुलन के लिए पकड़ी हुई थी। ल्हाटू ने ध्यान दिया कि मैं इन ऊँचाइयों के लिए सामान्यतः आवश्यक, चार लीटर ऑक्सीजन की अपेक्षा, लगभग ढाई लीटर ऑक्सीजन प्रति मिनट की दर से लेकर चढ़ रही थी। मेरे रेगुलेटर पर जैसे ही उसने ऑक्सीजन की आपूर्ति बढ़ाई, मुझे महसूस हुआ कि सपाट और कठिन चढ़ाई भी अब आसान लग रही थी।

शब्दार्थ –

आनंदित – खुश

अध्याय 2- एवरेस्ट : मेरी शिखर यात्रा

व्याख्या – बचेंद्री पाल कहती हैं कि दो घंटे से भी कम समय में ही वे सभी शिखर कैम्प पर पहुँच गए। अंगदोरजी ने पीछे मुड़कर देखा और बचेंद्री पाल से कहा कि क्या वह थक गई है। इसके जवाब में बचेंद्री पाल ने कहा कि वह नहीं थकी है, जिसे सुनकर वे बहुत अधिक आश्चर्यचकित और खुश हुए। उन्होंने कहा कि पहले वाले दल ने शिखर कैम्प पर पहुँचने में चार घंटे लगाए थे और यदि अब उनका दल इसी गति से चलता रहे तो वे शिखर पर दोपहर एक बजे एक पहुँच जाएँगे। ल्हाटू अंगदोरजी और बचेंद्री पाल के पीछे-पीछे आ रहा था और जब वे दक्षिणी शिखर के नीचे आराम कर रहे थे, वह भी अंगदोरजी और बचेंद्री पाल के पास पहुँच गया। थोड़ी-थोड़ी चाय पीने के बाद सभी ने फिर चढ़ाई शुरू की। ल्हाटू एक नाइलॉन की रस्सी लाया था। इसलिए अंगदोरजी और बचेंद्री पाल रस्सी के सहारे चढ़े, जबकि ल्हाटू एक हाथ से रस्सी पकड़े हुए बीच में चला। उसने रस्सी अपनी सुरक्षा की बजाय अंगदोरजी और बचेंद्री पाल के संतुलन के लिए पकड़ी हुई थी। ल्हाटू ने ध्यान दिया कि बचेंद्री पाल इन ऊँचाइयों के लिए सामान्यतः आवश्यक, चार लीटर ऑक्सीजन की अपेक्षा, लगभग ढाई लीटर ऑक्सीजन प्रति मिनट की दर से लेकर चढ़ रही थी। बचेंद्री पाल कहती हैं कि जैसे ही उसने बचेंद्री पाल के रेगुलेटर पर ऑक्सीजन की आपूर्ति बढ़ाई, बचेंद्री पाल कहती हैं कि उन्हें महसूस हुआ कि सीधी और कठिन चढ़ाई भी अब आसान लग रही थी।

पाठ – दक्षिणी शिखर के ऊपर हवा की गति बढ़ गई थी। उस ऊँचाई पर तेज़ हवा के झोंके भुरभुरे बर्फ के कणों को चारों तरफ़ उड़ा रहे थे, जिससे दृश्यता शून्य तक आ गई थी। अनेक बार देखा कि केवल थोड़ी दूर के बाद कोई ऊँची चढ़ाई नहीं है। ढलान एकदम सीधा नीचे चला गया है।

मेरी साँस मानो रुक गई थी। मुझे विचार कौंधा कि सफलता बहुत नज़दीक है। 23 मई 1984 के दिन दोपहर के एक बजकर सात मिनट पर मैं एवरेस्ट की चोटी पर खड़ी थी। एवरेस्ट की चोटी पर पहुँचनेवाली मैं प्रथम भारतीय महिला थी।

शब्दार्थ –

दृश्यता शून्य – कुछ भी देख पाना संभव नहीं

व्याख्या – बचेंद्री पाल कहती हैं कि दक्षिणी शिखर के ऊपर हवा की गति बढ़ गई थी। उस ऊँचाई पर तेज़ हवा के झोंके भुरभुरे बर्फ के कणों को चारों तरफ़ उड़ा रहे थे, जिससे दृश्यता शून्य तक आ गई थी कुछ भी देख पाना संभव नहीं हो पा रहा था। अनेक बार देखा कि केवल थोड़ी दूर के बाद कोई ऊँची चढ़ाई नहीं है। ढलान एकदम सीधा नीचे चला गया है। यह देख कर बचेंद्री पाल कहती हैं कि उनकी तो साँस मानो रुक गई थी। उन्हें विचार आया कि सफलता बहुत नज़दीक है। 23 मई 1984 के दिन दोपहर के एक बजकर सात मिनट पर वह एवरेस्ट की चोटी पर खड़ी थी। एवरेस्ट की चोटी पर पहुँचनेवाली बचेंद्री पाल प्रथम भारतीय महिला थी।

अध्याय 2- एवरेस्ट : मेरी शिखर यात्रा

पाठ – एवरेस्ट शंकु की चोटी पर इतनी जगह नहीं थी कि दो व्यक्ति साथ-साथ खड़े हो सकें। चारों तरफ़ हजारों मीटर लंबी सीधी ढलान को देखते हुए हमारे सामने प्रश्न सुरक्षा का था। हमने पहले बर्फ के फावड़े से बर्फ की खुदाई कर अपने आपको सुरक्षित रूप से स्थिर किया। इसके बाद, मैं अपने घुटनों के बल बैठी, बर्फ पर अपने माथे को लगाकर मैंने ‘सागरमाथा’ के ताज का चुंबन लिया। बिना उठे ही मैंने अपने थैले से दुर्गा माँ का चित्र और चालीसा निकाला। मैंने इनको अपने साथ लाए लाल कपड़े में लपेटा, छोटी-सी पूजा-अर्चना की और इनको बर्फ में दबा दिया। आनंद के इस क्षण में मुझे अपने माता-पिता का ध्यान आया।

जैसे मैं उठी, मैंने अपने हाथ जोड़े और मैं अपने रज्जु-नेता अंगदोरजी के प्रति आदर भाव से झुकी। अंगदोरजी जिन्होंने मुझे प्रोत्साहित किया और मुझे लक्ष्य तक पहुँचाया। मैंने उन्हें बिना ऑक्सीजन के एवरेस्ट की दूसरी चढ़ाई चढ़ने पर बधाई भी दी। उन्होंने मुझे गले से लगाया और मेरे कानों में फुसफुसाया, “दीदी, तुमने अच्छी चढ़ाई की। मैं बहुत प्रसन्न हूँ!”

शब्दार्थ –

शंकु – नोक

व्याख्या – बचेंद्री पाल कहती हैं कि एवरेस्ट की चोटी की नोक पर इतनी जगह नहीं थी कि दो व्यक्ति साथ-साथ खड़े हो सकें। चारों तरफ़ हजारों मीटर लंबी सीधी ढलान को देखते हुए उन सभी के सामने प्रश्न अब सुरक्षा का था। उन्होंने पहले बर्फ के फावड़े से बर्फ की खुदाई कर अपने आपको सुरक्षित रूप से खड़ा रहने लायक जगह बनाई। इसके बाद, बचेंद्री पाल कहती हैं कि वह अपने घुटनों के बल बैठी, बर्फ पर अपने माथे को लगाकर उन्होंने ‘सागरमाथा’ यानि एवरेस्ट के ताज का चुंबन लिया। बिना उठे ही उन्होंने अपने थैले से दुर्गा माँ का चित्र और चालीसा निकाली। उन्होंने इनको अपने साथ लाए लाल कपड़े में लपेटा, छोटी-सी पूजा-अर्चना की और इनको बर्फ में दबा दिया। खुशी के इस पल में बचेंद्री पाल को अपने माता-पिता का ध्यान आया। बचेंद्री पाल कहती हैं कि जैसे वह उठी, उन्होंने अपने हाथ जोड़े और वह अपने रज्जु-नेता अंगदोरजी के प्रति आदर भाव से झुकी। अंगदोरजी जिन्होंने बचेंद्री पाल को प्रोत्साहित किया और लक्ष्य तक पहुँचाया। बचेंद्री पाल ने उन्हें बिना ऑक्सीजन के एवरेस्ट की दूसरी चढ़ाई चढ़ने पर बधाई भी दी। उन्होंने बचेंद्री पाल को गले से लगाया और उनके कानों में फुसफुसाया कि दीदी, तुमने अच्छी चढ़ाई की। वह बहुत प्रसन्न है।

पाठ – कुछ देर बाद सोनम पुलजर पहुँचे और उन्होंने फोटो लेने शुरू कर दिए। इस समय तक ल्हाटू ने हमारे नेता को एवरेस्ट पर हम चारों के होने की सूचना दे दी थी। तब मेरे हाथ में वॉकी-टॉकी दिया गया। कर्नल खुल्लर हमारी सफलता से बहुत प्रसन्न थे। मुझे बधाई देते हुए उन्होंने कहा, “मैं तुम्हारी इस अनूठी उपलब्धि के लिए तुम्हारे माता-पिता को बधाई देना चाहूँगा!” वे बोले कि देश को तुम पर गर्व है और अब तुम ऐसे संसार में वापस जाओगी, जो तुम्हारे अपने पीछे छोड़े हुए संसार से एकदम भिन्न होगा!

अध्याय 2- एवरेस्ट : मेरी शिखर यात्रा

शब्दार्थ –

अनूठी – अलग

उपलब्धि – प्राप्ति

व्याख्या – बचेद्री पाल कहती हैं कि कुछ देर बाद सोनम पुलजर वहाँ पहुँचे और उन्होंने फोटो लेने शुरू कर दिए। इस समय तक ल्हाटू ने उनके नेता को एवरेस्ट पर उन चारों के होने की सूचना दे दी थी। तब बचेद्री पाल के हाथ में वॉकी-टॉकी दिया गया। कर्नल खुल्लर उनकी सफलता से बहुत प्रसन्न थे। बचेद्री पाल को बधाई देते हुए उन्होंने कहा कि वे बचेद्री पाल की इस अलग प्राप्ति के लिए बचेद्री पाल के माता-पिता को बधाई देना चाहते हैं। वे बोले कि देश को बचेद्री पाल पर गर्व है और अब वह एक ऐसे संसार में वापस जाएगी, जो उसके द्वारा अपने पीछे छोड़े हुए संसार से एकदम अलग होगा।

बहु विकल्पीय प्रश्न

प्रश्न 1 – एवरेस्ट पर चढ़ाई करने वाला दल दिल्ली से हवाई जहाज़ से काठमांडू कब चल पड़ा था?

(B) 5 मार्च को

(C) 10 मार्च को

(D) 8 मार्च को

उत्तर-(A) 7 मार्च को

प्रश्न 2 – बचेद्री पाल ने सर्वप्रथम एवरेस्ट को कहाँ से देखा था?

(A) हवाई जहाज़ से

(B) बेस कैम्प से

(C) एवरेस्ट के तल से

(D) नमचे बाज़ार

उत्तर-(D) नमचे बाज़ार

प्रश्न 3 – शिखर पर जानेवाले प्रत्येक व्यक्ति को कहाँ से आने वाले तूफानों को झेलना पड़ता है?

(A) पूर्वी-दक्षिणी पहाड़ी से

(B) दक्षिण-पूर्वी पहाड़ी से

(C) उत्तर-पूर्वी पहाड़ी से

(D) दक्षिणी-पश्चिमी पहाड़ी से

उत्तर-(B) दक्षिण-पूर्वी पहाड़ी से

प्रश्न 4 – 26 मार्च को पैरिच पहुँचते ही लेखिका को कौन सा दुःख भरा समाचार मिला।

- (A) बर्फ से रास्ता बंद होने का
- (B) अभियान स्थगित होने का
- (C) शेरपा कुली के घायल होने का
- (D) एक शेरपा कुली की मृत्यु का

उत्तर-(D) एक शेरपा कुली की मृत्यु का

प्रश्न 5 – कर्नल खुल्लर ने सभी सदस्यों को सहज भाव से क्या स्वीकार करने को कहा?

- (A) कठिन चढ़ाई
- (B) मृत्यु
- (C) परेशानियाँ
- (D) इनमें से कुछ नहीं

उत्तर-(B) मृत्यु

प्रश्न 6 – कैप-एक कितनी ऊँचाई पर था?

- (A) 600 मी.
- (B) 5000 मी.
- (C) 6000 मी.
- (D) 8000 मी.

उत्तर-(C) 6000 मी.

प्रश्न 7 – रसोई सहायक की मृत्यु किस कारण हो गई थी?

- (A) हिमपात के कारण
- (B) जलवायु के सही न होने के कारण
- (C) हिमखंडों के खिसकने के कारण
- (D) बिमारी के कारण

उत्तर-(B) जलवायु के सही न होने के कारण

प्रश्न 8 – लेखिका के अनुसार अचानक हमेशा ही खतरनाक स्थिति कैसे बन जाया करती थी?

- (A) बड़ी-बड़ी बर्फ की चट्टानों के अचानक से गिरने से
- (B) अत्यधिक बर्फ गिरने से

(C) बर्फ के गलेशियर बनने के कारण

(D) बीमार पड़ने के कारण

उत्तर-(A) बड़ी-बड़ी बर्फ की चट्टानों के अचानक से गिरने से

प्रश्न 9 – कौन सा दिन हिमपात से कैम्प-एक तक सामान ढोकर चढ़ाई का अभ्यास करने के लिए पहले से ही निश्चित था?

(A) पहला

(B) दूसरा

(C) तीसरा

(D) पाँचवा

उत्तर-(C) तीसरा

प्रश्न 10 – कैम्प-एक पर पहुँचने वाली दो महिलाएँ कौन थीं?

(A) डॉ मीनू मेहता तथा बचेद्री पाल

(B) रीता गोंबू तथा बचेद्री पाल

(C) डॉ मीनू मेहता तथा रीता गोंबू

(D) इनमें से कोई नहीं

उत्तर-(B) रीता गोंबू तथा बचेद्री पाल

प्रश्न 11 – 29 अप्रैल को कैम्प-चार कितनी ऊँचाई पर लगाया गया।

(A) 6900 मीटर

(B) 8900 मीटर

(C) 7900 मीटर

(D) 5900 मीटर

उत्तर-(C) 7900 मीटर

प्रश्न 12 – बचेद्री पाल और उनके साथियों के तंबू का रास्ता साफ़ करने में कौन सफल हो गए थे?

(A) लोपसांग

(B) तशारिंग

(C) एन.डी. शेरपा

(D) लोपसांग व तशारिंग

उत्तर-(A) लोपसांग

प्रश्न 13 – बचेद्री पाल को और आगे जाने से रोकने की कोशिश किसने की?

- (A) की
- (B) जय
- (C) मीनू
- (D) शेरपा

उत्तर-(B) जय

प्रश्न 14 – ‘पृथ्वी पर बहुत अधिक कठोर’ जगह के नाम से क्या प्रसिद्ध है?

- (A) ईस्ट कोल
- (B) वेस्ट कोल
- (C) नार्थ कोल
- (D) साउथ कोल

उत्तर-(D) साउथ कोल

प्रश्न 15 – बिना ऑक्सीजन के कौन चढ़ाई करने वाला था?

- (A) की
- (B) जय
- (C) अंगदोरजी
- (D) बचेद्री

उत्तर-(C) अंगदोरजी

प्रश्न 16 – बर्फ काटने के लिए किसका इस्तेमाल करना पड़ा?

- (A) फावड़े का
- (B) स्विस् छुरी का
- (C) नुकीली छड़ी का
- (D) इनमें से किसी का नहीं

उत्तर-(A) फावड़े का

प्रश्न 17 – कितने समय में वे सभी शिखर कैम्प पर पहुँच गए?

- (A) पाँच घंटे
- (B) दो घंटे
- (C) सात घंटे
- (D) तीन घंटे

उत्तर-(B) दो घंटे

प्रश्न 18 – ऊँचाइयों के लिए सामान्यतः आवश्यक ऑक्सीजन की दर कितनी होती है?

- (A) दो लीटर
- (B) पाँच लीटर
- (C) तीन लीटर
- (D) चार लीटर

उत्तर-(D) चार लीटर

प्रश्न 19 – लेखिका एवरेस्ट की चोटी पर कब खड़ी थी?

- (A) 23 मई 1984 के दिन दोपहर के एक बजकर सात मिनट पर
- (B) 22 मई 1984 के दिन दोपहर के एक बजकर सात मिनट पर
- (C) 29 मई 1984 के दिन दोपहर के एक बजकर सात मिनट पर
- (D) 21 मई 1984 के दिन दोपहर के एक बजकर सात मिनट पर

उत्तर-(A) 23 मई 1984 के दिन दोपहर के एक बजकर सात मिनट पर

प्रश्न 20 – लेखिका एवरेस्ट पर चढ़ाई करने वाली कौन सी महिला बनी?

- (A) दूसरी
- (B) पाँचवी
- (C) पहली
- (D) तीसरी

उत्तर-(C) पहली

सारांश

लेखिका परिचय

लेखिका – बचेंद्री पाल

जन्म – 1954

एवरेस्ट मेरी शिखर यात्रा पाठ प्रवेश

इस पाठ में बचेंद्री पाल अपनी एवरेस्ट पर की गई चढ़ाई और एवरेस्ट पर चढ़ने वाली प्रथम भारतीय महिला बनने के सफर की आत्मकथा को हम सभी के साथ साँझा कर रही हैं। बचेंद्री पाल को एवरेस्ट पर चढ़ाई के दौरान क्या-क्या समस्याएँ हुई और उन्होंने तथा उनके साथियों ने किस तरह उन समस्याओं का सामना किया बचेंद्री पाल उन सभी यादों को इस पाठ के माध्यम से सभी तक पहुँचाना चाहती हैं।

एवरेस्ट मेरी शिखर यात्रा पाठ सार

- ❖ बचेंद्री पाल अपनी एवरेस्ट की चढ़ाई के सफर की बात करते हुए कहती हैं कि एवरेस्ट पर चढ़ाई करने वाला दल 7 मार्च को दिल्ली से हवाई जहाज़ से काठमांडू के लिए चल पड़ा था। उस दल से पहले ही एक मज़बूत दल बहुत पहले ही एवरेस्ट की चढ़ाई के लिए चला गया था जिससे कि वह बचेंद्री पाल वाले दल के 'बेस कैम्प' पहुँचने से पहले बर्फ के गिरने के कारण बने कठिन रास्ते को साफ कर सके। बचेंद्री पाल कहती हैं कि नमचे बाज़ार, शेरपालैंड का एक सर्वाधिक महत्वपूर्ण नगरीय क्षेत्र है। यहीं से बचेंद्री पाल ने सर्वप्रथम एवरेस्ट को देखा था। बचेंद्री पाल कहती हैं कि लोगों के द्वारा बचेंद्री पाल को बताया गया कि शिखर पर जानेवाले प्रत्येक व्यक्ति को दक्षिण-पूर्वी पहाड़ी पर तूफानों को झेलना पड़ता है, विशेषकर जब मौसम खराब होता है। जब उनका दल 26 मार्च को पैरिच पहुँचा तो उन्हें हमें बर्फ के खिसकने के कारण हुई एक शेरपा कुली की मृत्यु का दुःख भरा समाचार मिला। सोलह शेरपा कुलियों के दल में से एक की मृत्यु हो गई और चार घायल हो गए थे।
- ❖ इस समाचार के कारण बचेंद्री पाल के अभियान दल के सदस्यों के चेहरों पर छाई उदासी को देखकर उनके दल के नेता कर्नल खुल्लर ने सभी सदस्यों को साफ़-साफ़ कह दिया कि एवरेस्ट पर चढ़ाई करना कोई आसान काम नहीं है, वहाँ पर जाना मौत के मुँह में कदम रखने के बराबर है। बचेंद्री पाल कहती हैं कि उपनेता प्रेमचंद, जो पहले वाले दल का नेतृत्व कर रहे थे, वे भी 26 मार्च को पैरिच लौट आए। उन्होंने बचेंद्री पाल के दल की पहली बड़ी समस्या बचेंद्री पाल और उनके साथियों को खुंभु हिमपात की स्थिति के बारे में बताया। उन्होंने बचेंद्री पाल और उनके साथियों को यह भी बताया कि पुल बनाकर, रस्सियाँ

अध्याय 2- एवरेस्ट : मेरी शिखर यात्रा

बाँधकर तथा झंडियों से रास्ते को चिह्नित कर, सभी बड़ी कठिनाइयों का जायज़ा ले लिया गया है। उन्होंने बचेद्री पाल और उनके साथियों का ध्यान इस पर भी दिलाया कि ग्लेशियर बर्फ की नदी है और बर्फ का गिरना अभी जारी है। जिसके कारण अभी तक के किए गए सभी काम व्यर्थ हो सकते हैं और उन लोगों को रास्ता खोलने का काम दोबारा करना पड़ सकता है।

- ❖ बचेद्री पाल कहती हैं कि 'बेस कैम्प' में पहुँचने से पहले उन्हें और उनके साथियों को एक और मृत्यु की खबर मिली। जलवायु के सही न होने के कारण एक रसोई सहायक की मृत्यु हो गई थी। निश्चित रूप से अब बचेद्री पाल और उनके साथी आशा उत्पन्न करने स्थिति में नहीं चल रहे थे। सभी घबराए हुए थे। बेस कैम्प पहुँचाने पर दूसरे दिन बचेद्री पाल ने एवरेस्ट पर्वत तथा इसकी अन्य श्रेणियों को देखा। बचेद्री पाल हैरान होकर खड़ी रह गई। बचेद्री पाल कहती हैं कि दूसरे दिन नए आने वाले अपने ज़्यादातर सामान को वे हिमपात के आधे रास्ते तक ले गए। डॉ मीनू मेहता ने बचेद्री पाल और उनके साथियों को अल्यूमिनियम की सीढ़ियों से अस्थायी पुलों का बनाना, लठ्ठों और रस्सियों का उपयोग, बर्फ की आड़ी-तिरछी दीवारों पर रस्सियों को बाँधना और उनके पहले दल के तकनीकी कार्यों के बारे में उन्हें विस्तार से सारी जानकारी दी। बचेद्री पाल कहती हैं कि उनका तीसरा दिन हिमपात से कैम्प-एक तक सामान ढोकर चढ़ाई का अभ्यास करने के लिए पहले से ही निश्चित था। रीता गोंबू तथा बचेद्री पाल साथ-साथ चढ़ रहे थे।
- ❖ उनके पास एक वॉकी-टॉकी था, जिससे वे अपने हर कदम की जानकारी बेस कैम्प पर दे रहे थे। कर्नल खुल्लर उस समय खुश हुए, जब रीता गोंबू तथा बचेद्री पाल ने उन्हें अपने पहुँचने की सूचना दी क्योंकि कैम्प-एक पर पहुँचने वाली केवल वे दो ही महिलाएँ थीं। जब अप्रैल में बचेद्री पाल कैम्प बेस में थी, तेनजिंग अपनी सबसे छोटी सुपुत्री डेकी के साथ उनके पास आए थे। उन्होंने इस बात पर विशेष महत्व दिया कि दल के प्रत्येक सदस्य और प्रत्येक शेरपा कुली से बातचीत की जाए। बचेद्री पाल कहती हैं कि जब उनकी बारी आई, तो उन्होंने अपना परिचय यह कहकर दिया कि वे इस चढ़ाई के लिए बिल्कुल ही नई सीखने वाली हैं और एवरेस्ट उनका पहला अभियान है। तेनजिंग हँसे और बचेद्री पाल से कहा कि एवरेस्ट उनके लिए भी पहला अभियान है, लेकिन यह भी स्पष्ट किया कि शिखर पर पहुँचने से पहले उन्हें सात बार एवरेस्ट पर जाना पड़ा था। फिर अपना हाथ बचेद्री पाल के कंधे पर रखते हुए उन्होंने कहा कि बचेद्री पाल एक पक्की पर्वतीय लड़की लगती है। उसे तो शिखर पर पहले ही प्रयास में पहुँच जाना चाहिए। बचेद्री पाल कहती हैं कि 15-16 मई 1984 को बुद्ध पूर्णिमा के दिन वह ल्होत्से की बर्फाली सीधी ढलान पर लगाए गए सुंदर रंगीन नाइलॉन के बने तंबू के कैम्प-तीन में थी। वह गहरी नींद में सोई हुई थी कि रात में 12.30 बजे के लगभग उनके सिर के पिछले हिस्से में किसी एक सख्त चीज़ के टकराने से उनकी नींद अचानक खुल गई और साथ ही एक ज़ोरदार धमाका भी हुआ।
- ❖ एक लंबा बर्फ का पिंड उनके कैम्प के ठीक ऊपर ल्होत्से ग्लेशियर से टूटकर नीचे आ गिरा था और उसका एक बहुत बड़ा बर्फ का टुकड़ा बन गया था। लोपसांग अपनी स्विस् छुरी की मदद से बचेद्री पाल और उनके साथियों के तंबू का रास्ता साफ़ करने में सफल हो गए थे। उन्होंने बचेद्री पाल के चारों तरफ

की कड़ी जमी बर्फ की खुदाई की और बचेद्री पाल को उस बर्फ की कब्र से निकाल कर बाहर खींच लाने में सफल हो गए। बचेद्री पाल कहती हैं कि अगली सुबह तक सारे सुरक्षा दल आ गए थे और 16 मई को प्रातः 8 बजे तक वे सभी कैम्प-दो पर पहुँच गए थे। बचेद्री पाल और उनके दल के नेता कर्नल खुल्लर ने पिछली रात को हुए हादसे को उनके शब्दों में कुछ इस तरह कहा कि यह इतनी ऊँचाई पर सुरक्षा-कार्य का एक अत्यंत साहस से भरा कार्य था। बचेद्री पाल कहती हैं कि सभी नौ पुरुष सदस्यों को जिन्हें चोटें आई थी और हड्डियां टूटी थी उन्हें बेस कैम्प में भेजना पड़ा। तभी कर्नल खुल्लर बचेद्री पाल की तरफ मुड़े और कहने लगे कि क्या वह डरी हुई है? इसके उत्तर में बचेद्री पाल ने हाँ में उत्तर दिया। कर्नल खुल्लर के फिर से पूछने पर कि क्या वह वापिस जाना चाहती है? इस बार बचेद्री पाल ने बिना किसी हिचकिचाहट के उत्तर दिया कि वह वापिस नहीं जाना चाहती। बचेद्री पाल कहती हैं कि दोपहर बाद उन्होंने अपने दल के दूसरे सदस्यों की मदद करने और अपने एक थर्मस को जूस से और दूसरे को गरम चाय से भरने के लिए नीचे जाने का निश्चय किया। उन्होंने बर्फाली हवा में ही तंबू से बाहर कदम रखा। बचेद्री पाल को जय जेनेवा स्पर की चोटी के ठीक नीचे मिला। उसने बचेद्री पाल के द्वारा लाई गई चाय वगैरह पी लेकिन बचेद्री पाल को और आगे जाने से रोकने की कोशिश भी की। मगर बचेद्री पाल को की से भी मिलना था।

- ❖ थोड़ा-सा और आगे नीचे उतरने पर उन्होंने की को देखा। की बचेद्री पाल को देखकर चौंक गया और उसने बचेद्री पाल से कहा कि उसने इतना बड़ा जोखिम क्यों उठाया? बचेद्री पाल ने भी उसे दृढ़तापूर्वक कहा कि वह भी औरों की तरह एक पर्वतारोही है, इसीलिए वह इस दल में आई हुई है। बचेद्री पाल कहती हैं कि साउथ कोल 'पृथ्वी पर बहुत अधिक कठोर' जगह के नाम से प्रसिद्ध है। बचेद्री पाल कहती हैं कि अगले दिन वह सुबह चार बजे उठी। उसने बर्फ को पिघलाया और चाय बनाई, कुछ बिस्कुट और आधी चॉकलेट का हलका नाश्ता करने के बाद वह लगभग साढ़े पाँच बजे अपने तंबू से निकल पड़ी। बचेद्री पाल कहती हैं कि सुबह 6:20 पर जब अंगदोरजी और वह साउथ कोल से बाहर निकले तो दिन ऊपर चढ़ आया था। हलकी-हलकी हवा चल रही थी, लेकिन ठंड भी बहुत अधिक थी। बचेद्री पाल और उनके साथियों ने बगैर रस्सी के ही चढ़ाई की। अंगदोरजी एक निश्चित गति से ऊपर चढ़ते गए और बचेद्री पाल को भी उनके साथ चलने में कोई कठिनाई नहीं हुई। बचेद्री पाल कहती हैं कि जमे हुए बर्फ की सीधी व ढलाऊ चट्टानें इतनी सख्त और भुरभुरी थीं, ऐसा लगता था मानो शीशे की चादरें बिछी हों। उन सभी को बर्फ काटने के फावड़े का इस्तेमाल करना ही पड़ा और बचेद्री पाल कहती हैं कि उन्हें इतनी सख्ती से फावड़ा चलाना पड़ा जिससे कि उस जमे हुए बर्फ की धरती को फावड़े के दाँते काट सके। बचेद्री पाल कहती हैं कि उन्होंने उन खतरनाक स्थलों पर हर कदम अच्छी तरह सोच-समझकर उठाया।
- ❖ क्योंकि वहाँ एक छोटी सी भी गलती मौत का कारण बन सकती थी। बचेद्री पाल कहती हैं कि दो घंटे से भी कम समय में ही वे सभी शिखर कैम्प पर पहुँच गए। अंगदोरजी ने पीछे मुड़कर देखा और उन्होंने कहा कि पहले वाले दल ने शिखर कैम्प पर पहुँचने में चार घंटे लगाए थे और यदि अब उनका दल इसी

अध्याय 2- एवरेस्ट : मेरी शिखर यात्रा

गति से चलता रहे तो वे शिखर पर दोपहर एक बजे एक पहुँच जाएँगे। ल्हाटू ने ध्यान दिया कि बचेंद्री पाल इन ऊँचाइयों के लिए सामान्यतः आवश्यक, चार लीटर ऑक्सीजन की अपेक्षा, लगभग ढाई लीटर ऑक्सीजन प्रति मिनट की दर से लेकर चढ़ रही थी। बचेंद्री पाल कहती हैं कि जैसे ही उसने बचेंद्री पाल के रेगुलेटर पर ऑक्सीजन की आपूर्ति बढ़ाई, बचेंद्री पाल कहती हैं कि उन्हें महसूस हुआ कि सीधी और कठिन चढ़ाई भी अब आसान लग रही थी। बचेंद्री पाल कहती हैं कि दक्षिणी शिखर के ऊपर हवा की गति बढ़ गई थी। उस ऊँचाई पर तेज़ हवा के झोंके भुरभुरे बर्फ के कणों को चारों तरफ़ उड़ा रहे थे, जिससे दृश्यता शून्य तक आ गई थी कुछ भी देख पाना संभव नहीं हो पा रहा था। अनेक बार देखा कि केवल थोड़ी दूर के बाद कोई ऊँची चढ़ाई नहीं है। ढलान एकदम सीधा नीचे चला गया है। यह देख कर बचेंद्री पाल कहती हैं कि उनकी तो साँस मानो रुक गई थी। उन्हें विचार आया कि सफलता बहुत नज़दीक है।

- ❖ 23 मई 1984 के दिन दोपहर के एक बजकर सात मिनट पर वह एवरेस्ट की चोटी पर खड़ी थी। एवरेस्ट की चोटी पर पहुँचने वाली बचेंद्री पाल प्रथम भारतीय महिला थी। बचेंद्री पाल कहती हैं कि एवरेस्ट की चोटी की नोक पर इतनी जगह नहीं थी कि दो व्यक्ति साथ-साथ खड़े हो सकें। चारों तरफ़ हजारों मीटर लंबी सीधी ढलान को देखते हुए उन सभी के सामने प्रश्न अब सुरक्षा का था। उन्होंने पहले बर्फ के फावड़े से बर्फ की खुदाई कर अपने आपको सुरक्षित रूप से खड़ा रहने लायक जगह बनाई। खुशी के इस पल में बचेंद्री पाल को अपने माता-पिता का ध्यान आया। बचेंद्री पाल कहती हैं कि जैसे वह उठी, उन्होंने अपने हाथ जोड़े और वह अपने रज्जु-नेता अंगदोरजी के प्रति आदर भाव से झुकी। अंगदोरजी जिन्होंने बचेंद्री पाल को प्रोत्साहित किया और लक्ष्य तक पहुँचाया। बचेंद्री पाल ने उन्हें बिना ऑक्सीजन के एवरेस्ट की दूसरी चढ़ाई चढ़ने पर बधाई भी दी। उन्होंने बचेंद्री पाल को गले से लगाया और उनके कानों में फुसफुसाया कि दीदी, तुमने अच्छी चढ़ाई की। वह बहुत प्रसन्न है। कर्नल खुल्लर उनकी सफलता से बहुत प्रसन्न थे। बचेंद्री पाल को बधाई देते हुए उन्होंने कहा कि वे बचेंद्री पाल की इस अलग प्राप्ति के लिए बचेंद्री पाल के माता-पिता को बधाई देना चाहते हैं। वे बोले कि देश को बचेंद्री पाल पर गर्व है और अब वह एक ऐसे संसार में वापस जाएगी, जो उसके द्वारा अपने पीछे छोड़े हुए संसार से एकदम अलग होगा।